तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

जनवरी-2020 रु.5/-

सब कुछ तू ही है
हरि पुंडरीकाक्ष!
- अन्नमय्या

जनवरी 06
वैकुंठ एकादशी

२३-११-२०१९ से
०१-१२-२०१९ तक संपन्न
तिरुचानूर की
श्री पद्मावतीदेवी के वार्षिक ब्रह्मोत्सवों की
दृश्य मालिका

युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-६)

पराक्रमी युधामन्यु तथा बलवान उत्तमौजा, सुभद्रापुत्र अभिमन्यु एवं द्रौपदी के पाँचों पुत्र - ये सभी महारथी हैं।

श्री सरस्वती द्वादशनाम स्तोत्रम्

सरस्वती त्वियं दृष्ट्वा वीणापुस्तक धारिणी।
हंसवाहसमायुक्ता विद्यादानकरी मम।।

प्रथमं भारतीनाम द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदादेवी चतुर्थं हंसवाहिनी।।

पंचमं जगती ख्याता षष्ठं वागीश्वरी तथा।
कौमारी सप्तमं प्रोक्ता अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।

नवमं बुद्धिदात्री च दशमं वरदायिनी।
एकादशं क्षुद्रघंटा द्वादशं भुवनेश्वरी।।

ब्राह्मी द्वादश नामानी त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः।
सर्वसिद्धिकरी तस्य प्रसन्ना परमेश्वरी।।

सा मे वसतु जिह्वाग्रे ब्रह्मरूपा सरस्वती।
।। इति श्री सरस्वती द्वादशनामस्तोत्रम् ।।

ति.ति.दे. मंदिरों की
संदर्शन-यात्रा पैकेज टूर

आंध्रप्रदेश ट्यूरिजम् डेवलप्मेंट कार्पोरेषन्

1. स्थानिक आलयों का दर्शन (प्रतिदिन)

शुल्क	निकलने का स्थान	ट्रिप्स	समय
नान् ए.सी. रु.100/- ए.सी. रु.150/- (10 वर्ष के अन्दर बच्चों को टिकट का जरूरत नहीं है।)	श्रीनिवासम् समुदाय और विष्णुनिवासम्, तिरुपति	6 (छे)	सुबह 6-00 बजे से दोपहर 1-00 बजे तक

दर्शनीय मंदिर

1. श्री पद्मावती देवी मंदिर ... तिरुचानूर
2. श्री अगस्त्येश्वर स्वामी मंदिर ... तोंडवाडा
3. श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर ... श्रीनिवासमंगापुरम्
4. श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर ... तिरुपति
5. श्री गोविंदराज स्वामी मंदिर ... तिरुपति

2. तिरुपति के आस-पास मंदिरों का संदर्शन यात्रा (प्रतिदिन)

शुल्क	निकलने का स्थान	ट्रिप्स	समय
नान् ए.सी. रु.250/- ए.सी. रु.350/- (10 वर्ष के अन्दर बच्चों को टिकट का जरूरत नहीं है।)	श्रीनिवासम् समुदाय और विष्णुनिवासम्, तिरुपति	2 (दो)	सुबह 8-00 बजे को और सुबह 9-00 बजे को

दर्शनीय मंदिर

1. श्री वेणुगोपाल स्वामी मंदिर ... कार्वेटिनगरम्
2. श्री वेदनारायण स्वामी मंदिर ... नागुलापुरम्
3. श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर ... नारायणवनम्
4. श्री प्रसन्न वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर ... अप्पलायगुंटा
5. श्री करियमाणिक्य स्वामी मंदिर ... नगरि
6. श्री अन्नपूर्णासमेत काशीविश्वेश्वर स्वामी मंदिर ... बुग्ग
7. श्री पल्लिकोण्डेश्वर स्वामी मंदिर ... सुरुटुपल्लि

अन्य विवरण के लिए कृपया सम्पर्क करें दूरभाष : **0877 - 2289123, 2289120, 9848007033.**

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।

वर्ष-५० जनवरी-२०२० अंक-०८

विषयसूची

मुक्तिप्रदतीर्थ-श्री स्वामिपुष्करिणी	डॉ.बी.के.माधवी	07
मकर संक्रांति	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	11
श्री कुरेश स्वामीजी	श्रीमती उषादेवी अगर्वाल	15
तिरुमल की पहली देहली 'देवुनि कडपा'	डॉ.एच.एन.गौरीराव	18
दिव्यक्षेत्र तिरुमल	श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण	22
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	26
प्रभु प्राप्ति के लिये धनुर्मास	श्री ज्योतीन्द्र अजवालिया	31
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	35
नायक के गुण	श्री अमोग गौराँग दास	37
श्री कलिवैरिदास स्वामीजी (श्री नम्पिळ्ळै)	श्रीमती शालिनी डी.बुबना	39
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	42
भागवत कथा सागर अजामिल का उद्धार	श्री अमोग गौराँग दास	43
आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	46
राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	48
तिरुपति में गीता जयन्ती महा-महोत्सव	श्री अमोग गौराँग दास	50

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस्.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री आर.वी.विजयकुमार, बी.ए., बी.एड्.,
उपकार्यनिर्वहणाधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशियों को वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, 2264360.

मुखचित्र - **श्रीमहाविष्णु।**
चौथा कवर पृष्ठ - **श्रीहरिहृदयनिवासिनी।**

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त किये विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

जीवनोन्नति का प्रतीक - उत्तरायण पुण्यकाल

मकर संक्रमण का आगमन हुआ। जन तथा उनके मन में उमंग भी उभर रही है। दक्षिण भारत में ''संक्रांति'' तीन दिवसीय पर्व है जिसे दक्षिण के भारतवासी धूम-धाम से मनाते हैं। पर्व का परमार्थ जितना महत्व रखता है, उतना ही महत्व रखनेवाले दृश्य इन दिनों विशेष रूप से दिखाई देते रहते हैं। घरों के सामने चलिमंटलु (अग्नि सुलगाना), गोविंद दासरुलु (गोविंद का नामस्मरण करते हुए ऊँचावृत्ति करनेवाले विचित्रवेषधारी), गोब्बेम्मलु (गाय के गोबर का गोल बनाकर, उसे पार्वती माँ समझकर, उस पर हल्दी, कुंकुम तथा फूल सजाकर, रंगोली के बीच रखना), नवी दंपति का विशेष स्वागत, मुर्गा लड़ाइयाँ, रंगीन रंगोलियाँ, अनेक व्यंजनों से बने विशेष भोजन आदि को देखते हैं। वास्तव में यह त्यौहार, खेती की संपदा के व्याप्त खुशी में तथा मनो जाड्य का नवचैतन्य की ओर अग्रसर होते समय मनाई जाती है।

मकर संक्रांति का त्यौहार सकलदेवता स्वरूपी, समस्त लोकों के प्रत्यक्ष दैव सूर्य भगवान का धनुराशि से मकर राशि में प्रवेश करने के संदर्भ में मनाया जाता है। दक्षिणायन में अस्वस्थता, बाढ-अकाल आदि से पीडित जनसमूह को स्वस्थता, खेतों से धान्य मिलना, इनके परिणामस्वरूप खुशियों में बढौतरी, मकर संक्रांति के साथ पुनः प्राप्त होता है। मकर संक्रमण का पर्व अत्यंत पवित्र माना जाता है। इसीलिए महाभारत घोषित करता है कि भीष्माचार्य ने उत्तरायण के आगमन के बाद ही अपना शरीर छोडा था। समग्र रूप से हम यह कह सकते हैं कि मकर संक्रांति का पर्व अनाज, आनंद, शांति, स्वास्थ्य, छोटे-बडे सभी में नवचेतनता को जगानेवाला पर्व है।

भारतीय संस्कृति पितृदेवताओं को विशेष स्थान व महत्व देता है। पितृदेवताओं को श्रद्धापूर्वक तिलोदक तर्पण देना एक पवित्र कार्य है, यह वेदोक्ति है। पंचमहायज्ञों में पितृतर्पण का भी गिनती की जाती है। इसीलिए, इस त्यौहार के संदर्भ में पिंडप्रदान करना उचित कार्य माना जाता है, भारत में यह रिवाज चालू भी है। इससे पितृदेवता तृप्त होते हैं। उनके कटाक्ष को प्राप्त के लिए यही उचित समय है।

तीन दिवसीय त्यौहार में, तीसरे दिवस को मनाये जानेवाला 'कनुम' विशेषतया 'गोमाता' से संबद्ध पर्व है। गाय अत्यंत पवित्र प्राणि मानी जाती है। यह प्रजा की रक्षा करती है। समस्त तीर्थों में स्नान करने पर, समस्त देवताओं की सेवा करने पर जितना पुण्य मिलता है, उतना पुण्य, गोमाता को छूने मात्र से मिलता है। 'गाय को मारने पर नरक की प्राप्ति होती है - यह वेदोक्ति है।' ति.ति.दे. इसीलिए गऊओं के रक्षणार्थ अन्यान्य व्यवस्थाएँ कर रही है। आइए, आप और हम मिलकर गाय की पूजा करें तथा उनकी रक्षा करें।

सप्तगिरि मासिक पत्रिका में जनवरी २०२० से कई परिवर्तन ले आया जा रहा है। पर्यावरण के प्रदूषण को रोकने के लिए सप्तगिरि मासिक पत्रिका को प्लास्टिक कवर की बजाय कागज के कवर में भेजा जायेगा। आशा करते हैं कि पाठकवर्ग इसका सहर्ष स्वागत करेंगे। परिवर्तन के इस क्रम में ति.ति.दे. ने सप्तगिरि मासिक पत्रिका के साथ बच्चों के लिए विशेष रूप से २० पृष्ठों की 'बालसप्तगिरि' नामक छोटी पुस्तिका संलग्न करने का निर्णय लिया। आज जो बीज बोये जाते हैं, वे आगामी दिनों में महावृक्ष का रूप धारण करेंगे। देश का भविष्य अगर उज्ज्वल होना हो, तो उसके लिए बच्चों को मानवीयमूल्यों की सीख के साथ पलना-बढना आवश्यक बन जाता है। ति.ति.दे. इस दिशा को पकड रही है। इसके साथ-साथ बच्चों में अपनी संस्कृति, धर्म, पुराण, भगवान के बारे में, बड़ों के प्रति आदर व सम्मान का भाव बढाने के लिए, आध्यात्मिक तत्व से उन्हें ओत-प्रोत करने के लिए सप्तगिरि पत्रिका नये सिरे से 'क्विज' (प्रश्नोत्तरी) को बडे मजे में कर रहा है। माँ-पिताजी भी अपने बच्चों में पुराण, इतिहासादि के ज्ञान के उन्नतम के लिए सप्तगिरि मासिक पत्रिका को पढाने के लिए प्रोत्साहन दें। आप भी पढिए तथा बच्चों में आध्यात्मिक विषयों में रुचि बढ़ाइए।

मुक्तिप्रदतीर्थ-श्री स्वामिपुष्करिणी

श्री स्वामिपुष्करिणी तीर्थमुक्कोटि
(०७ जनवरी २०२०) के संदर्भ में...

तेलुगु मूल - श्रीमती एम.उत्तरफल्गुणी
हिन्दी अनुवाद - डॉ.बी.के.माधवी
मोबाइल - ९४४१६४६०४५

अखिलांडकोटि ब्रह्मांडनायक वेंकटाचल पर्वत पर आनंदनिलय विमान में विराजित श्री वेंकटेश्वर स्वामी के सन्निधान के ईशान्य भाग में मुक्तिप्रद सप्ततीर्थों में पहली ''श्री स्वामिपुष्करिणी तीर्थ'' नामक एक पुण्य तीर्थ है। यह तीर्थ तीनों लोकों के समस्त पुण्यतीर्थों के स्वामिनि होने के कारण ''स्वामिपुष्करिणी'' नाम प्रख्यात हुआ है। ऐसे सर्वतीर्थस्वामिनी इस स्वामिपुष्करिणी तीर्थ के बारे में पुराणों में और महर्षियों ने कई तरह की प्रशंसा की है। विविध पुराणों में इस तीर्थ के बारे में किस प्रकार की प्रशंसा किये हुए हैं अब हम जानेंगे।

१. वामन पुराण - पूर्व मार्कंडेयमहर्षि ने ब्रह्म के लिए घोर तप किये हैं। उनके तप से प्रसन्न ब्रह्मदेव ने वर देने के लिए तैयार हुआ। इससे मार्कंडेय ने कहा कि- ''हे देव! सृष्टि में रहे सब तीर्थों का मैं सेवन करना चाहता हूँ। इसके लिए मुझे शक्ति दीजिए।'' इससे ब्रह्मदेव ने कहा कि- 'तुम्हारी इस इच्छा कई हजार सालों तक भी पूरा नहीं होगी, लेकिन सर्वतीर्थयात्रा फल पाने का एक मार्ग है। वह है श्री वेंकटेश्वर पर्वत पर ''स्वामिपुष्करिणी'' नामक महत्व तीर्थ है। वह सब पापों को दूर करेगा। वहाँ हर साल धनुर्मास में यानि मार्गशिर मास के शुक्ल पक्ष में द्वादशी तिथि के दिन उषोदय में तीनों लोकों के सारे तीर्थ स्वामिपुष्करिणी में पहुँचता है। इसलिए उस दिन तुम भी वहाँ जाकर उस तीर्थ का सेवन करोगे तो

समस्ततीर्थों का सेवन किये गये फल तुम्हें प्राप्त होगी।' इस प्रकार ब्रह्म कहने के अनुसार ''स्वामिपुष्करिणी'' का सेवन करके स्वामी का दर्शन करके कृतार्थ हुआ है। इस तीर्थ का सेवन करने से सर्व तीर्थ सेवा फल प्राप्त होता है।

२. वराहपुराण - 'शंख' नामक राजा अच्छे भक्त और पराक्रमशाली है। बहुत धार्मिक रूप से परिपालन करते रहे। एक बार दुर्भाग्यवश सारे राजाओं ने एकत्रित होकर उस पर आक्रमण करके उसको हराकर राज्यभ्रष्ट किये हैं। तब प्राणों से बचाकर अपने गुरुजनों से मिला है। उनसे पूछा कि उसे किसी सलाह देने की प्रार्थना की। तब उन्होंने कहा कि - ''वेंकटाचल जाकर भगवान से प्रार्थना करके पुष्करिणी में स्नान करे तो तुम्हारी समस्याओं का परिष्कार मिलकर तुम्हारे राज्य फिर से तुम्हे मिलेगा।'' उनकी बातों से शंखुक भक्तिश्रद्धाओं से वेंकटाचल यात्रा करके श्रीनिवास की प्रार्थना करके पुष्करिणी में स्नान किया है। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर स्वामी ने जब वह पुष्करिणी के बीच में स्नान करते समय में ही दर्शन देकर अनुग्रह किया है। सब भगवान की मनोभीष्ट ही है सब शत्रु राजाओं ने अपने-आप में लडकर वापस शंखुक को ही राज्य दे दिये हैं। ऐसे 'शंखुक' को महाप्रयत्न करने पर भी नहीं रहने वाले राज्य, पुष्करिणी में स्नान करते ही वापस आया है। ऐसे खो गये स्वामित्व वापस देने की शक्ति रहने के कारण उसे ''स्वामिपुष्करिणी'' नाम आया है। इस तीर्थ का सेवन करने से धैर्य, शक्तियुक्तियों की सिद्धि प्राप्त होगी।

३. स्कंद पुराण - पूर्व चंद्रवंश में नंद नामक राजा को धर्मगुप्त नाम का पुत्र पैदा हुआ है। वह बडे होने के बाद नंद ने राज्यभार पुत्र को सौंपकर जंगल में चला गया। वह अच्छी तरह राज्य का पालन करने लगा। एक दिन धर्मगुप्त ने जंगल गया। अंधकार छा गया। उस समय एक सिंह उसका पीछा पड गया। वह डरकर पेड के ऊपर चढ गया। लेकिन उस पेड पर इसके पहले ही एक भालू था। उसे देखकर राजा ने डर

गया। लेकिन वह भालू मानवों की भाषा में कहने लगा कि - ''हे राजा आप मत डरिए। ओ (सिंह) शेर पेड के नीचे ही है। आप थोडी देर तक निश्चिंता से सोइए। मैं आपकी रक्षा में रहता हूँ।'' उसकी बातें सुनकर राजा ने सो गया। तब शेर ने उसे देखकर कहा कि- ''ओ राजा को मेरे आहार के रूप में नीचे डालो।'' तब भालू ने कहा कि - ''नहीं मैं उस राजा को वाग्दान दिया, उसका द्रोह मैं नहीं करूँगा। ऐसे करूँगा तो मुझे निष्कृति नहीं रहेगा। तुम्हारी दुराशा को छोड दो।'' उसके बाद राजा ने जागा। अब भालू सोने लगा। तब शेर ने कहा कि- ''मुझे आहार के रूप में उस भालू को नीचे डालो?'' शेर की बातें सुनकर राजा ने कृतघ्नता से भालू को नीचे डकेल दिया। तब भालू ने धडक से पेडे की डाली को पकडकर ऊपर आया। तब भालू ने राजा को शाप दिया- ''तुम कृतघ्न हो। तुमने पाप का काम किया है, इसलिए तुम अपने बुद्धि को खोकर पागल बन जाओगे।'' इस प्रकार पागल राजा को लेकर सैनिकों ने जंगल में तप करते हुए उसके पिता के पास ले गये। उसे देखकर राजा बहुत दु:खित होकर जैमिनी महर्षि की सलाह से वेंकटगिरि पर रहे स्वामिपुष्करिणी तीर्थ सेवा करवाये। अपने पुत्र से मिलकर धर्मगुप्त ने स्वस्थ होकर वापस अपने राज्य पहुँचा। इस तीर्थ की सेवा से ब्रह्महत्या दोष के कारण मिले पाप का नाश हो जायेगा।

४. ब्रह्मपुराण - पूर्व एक समय में सरस्वती देवी ने गंगा नदी और अन्य नदियों से उन्नत, महिमान्वित तीर्थराज के रूप में गौरव पाने की इच्छा से सरस्वती नदी के रूप में प्रवाहित होने लगी। तब वहाँ पुलस्त्य महामुनि ने आया था। तब उस महर्षि को देखकर भी सरस्वती देवी ने उसका अतिथि गौरव नहीं किया तब महर्षि ने शाप दिया कि- ''तुम गंगादि नदियों से प्रसिद्धि बनकर रहने की तुम्हारी इच्छा पूरा नहीं होगी। गंगानदी ही अत्यंत महान बनकर रहेगी।'' तब सरस्वती देवी ने प्रतिशाप दिया कि - ''तुम्हारे वंश श्रीमहाविष्णु के अप्रिय राक्षसों से पूरा होगी।'' तब पुलस्त्य महामुनि ने सरस्वती देवी से कई तरह की प्रार्थनाएँ की। तब सरस्वती देवी ने खुश होकर कहा कि- ''तुम्हारे वंश में आखरी वाला विभीषण नाम से चिरंजीवि बनकर रहेगा।'' ऐसे कहकर वर दिया। ऐसे विराजित हुए नदी ही स्वामिपुष्करिणी है। इस तीर्थ का सेवन करने से सकलपाप दोषों से मुक्ति मिलेगी।

५. भविष्योत्तर पुराण - सीतापहरण के बाद रामलक्ष्मणों ने हनुमान से मिलकर सुग्रीव को मित्र बनाकर वालि का वध करके, वानर सेना से रावण लंका की ओर निकल पडे। ऐसे मार्ग मध्य में शेषाचल पर्वत पर पहुँचे। तब अंजनादेवी ने श्रीराम को नमस्कार करके प्रार्थना की कि- ''मैं और यहाँ के सारे मुनिगण तुम्हारे इंतजार में रहें। आप इस पर्वत पर आकर हमें अनुग्रह देने की कृपा करें।'' तब श्रीराम ने कहा कि- लंका में काम पूरा करके वापस आते समय तुम्हारी इच्छा जरूर पूरा करूँगा। तब हनुमान ने कुछ कारणों से श्रीराम को पहाड चढा दिया। ऐसे श्रीराम ने अंजनादेवी के आश्रम में पहुँचा। वहाँ अंजना देवी का अनुग्रह देकर, स्वामिपुष्करिणी जाकर वहाँ स्नान किया। वह पुष्करिणी जिनका स्वामित्व खोया हुआ है उसे प्रसाद करती है। अन्य सब विषयों में विजय की प्राप्ति देनेवाली इस पुष्करिणी में स्नान करके श्रीराम ने रावण संहार, सीताचरविमोचन, उसके बाद राज्यपट्टाभिषेक, विजय श्रीराम को मिला है। पुराणों में

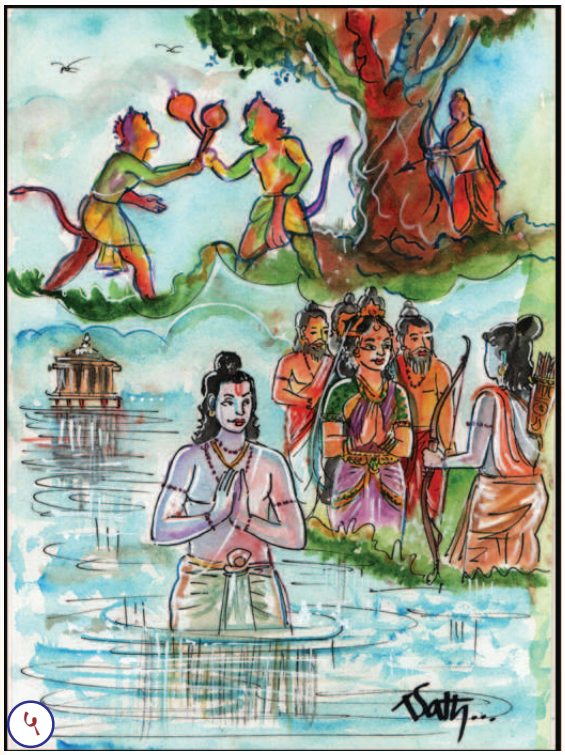

भी कहा गया है कि इस तीर्थ का सेवन करने से सकल विजय सिद्धियों की प्राप्ति होगी।

श्री स्वामिपुष्करिणी तीर्थमुक्कोटि

श्री स्वामिपुष्करिणी स्नान, सत्गुरु पादसेवन, एकादशी व्रत ये तीनों अत्यंत दुर्लभ है।

वराह पुराण में कहा गया है कि- ऐसे ही मानव के रूप में जन्म लेना, मानव के रूप में जीना, इस मानव जीवन में श्री स्वामिपुष्करिणी में स्नान करना ये सब दुर्लभ है। सभी तीर्थों में परमपावन तीर्थ तिरुमल में रहे ''स्वामिपुष्करिणी तीर्थ'' है। इस पुष्करिणी का दर्शन करने से इस तीर्थ का सेवन करने से, स्मरण करने से इसमें स्नान करने से समस्त पापों का नाश हो जाता है। सकल सुखों की सिद्धि प्राप्त होगी। इस तीर्थ से बढकर कुछ तीर्थ नहीं है।

पुराणों के द्वारा विदित होता है कि- श्रीमहाविष्णु की अनुज्ञा के द्वारा गरुत्मंत ने वैकुंठ से क्रीडाद्रि के साथ इस पुष्करिणी को ले आकर यहाँ इस क्षेत्र में स्थापित किया है। इस स्वामिपुष्करिणी सर्वतीर्थों का निलय है। सर्वपापहर भी है। स्नान करने मात्र से इहपरों की सिद्धि मिल जायेगी।

कलियुग वैकुंठ तिरुमल पुण्य क्षेत्र में विराजित पुष्करिणी को ही - ''श्री स्वामिपुष्करिणी'' नाम है। ब्रह्मांड के सर्वतीर्थों का ''स्वामी'' होने से इस तीर्थ को ''स्वामिपुष्करिणी'' के सार्थक नामधेय से तिरुमल के पुष्करिणी विराजमान है। वैकुंठ एकादशी के अगले दिन द्वादशी आता है। इस दिन सूर्योदय के समय ''श्री स्वामिपुष्करिणी तीर्थमुक्कोटि'' का निर्वहण किये जाते हैं। वैकुंठ एकादशी के दिन तीन करोड पचास लाख पुण्य तीर्थ व पुष्करिणियाँ तिरुमल के ''श्री स्वामिपुष्करिणी'' में दिव्य सूक्ष्म रूप में लीन होकर रहता है।

यानि कि सकल देवतागण वहाँ पहुँचते हैं। इसलिए इस पर्वदिन में श्री स्वामी के मंदिर में स्वामी को सुप्रभात, तोमाल सेवा, अर्चना, निवेदनादि कार्यक्रम यथारूप से किये जाते हैं। उसके बाद आनंदनिलय में रहे ''सुदर्शन चक्रत्ताल्वार'' पालकी में विराजमान होकर, जुलूस निकालते हुए तिरुमल तिरुवीथियों में महाप्रदक्षिण के रूप में आकर श्री वराहस्वामी के प्रांगण में पहुँचते हैं। वहाँ ''चक्रत्ताल्वार'' का अभिषेक होने के बाद पुष्करिणी में पवित्रस्नान करवाते हैं। इस प्रकार स्नान करते समय असंख्याक भक्तजन भी पुष्करिणी में डुबुकियाँ लगाकर पवित्र स्नान करते हैं। उसके बाद चक्रत्ताल्वार को वस्त्रालंकार, निवेदना, आरति अत्यंत वैभव के साथ निर्वहण करते हैं। चक्रत्ताल्वार (सुदर्शन भगवान) वहाँ से निकलकर प्रदक्षिण से आकर स्वामी मंदिर में प्रवेश करते हैं।

ऐसे परमपावन इस पुष्करिणी के तट में धनुर्मास में वैकुंठ द्वादशी के सूर्योदय के समय समस्त तीर्थों का आवाहन होगा। इसीलिए उस दिन ''श्री स्वामिपुष्करिणी तीर्थमुक्कोटि'' नाम से प्रसिद्ध हुआ है। धनुर्मास में आनेवाले शुक्लपक्ष द्वादशी के दिन सूर्योदय के समय जिन लोगों ने मनःप्रीति से स्नान करेंगे वे अपने सगोत्र, दायादि, बंधुजन सब सर्व पापों से मुक्त हो जायेंगे। इतने परमपिवत्र स्वामिपुष्करिणी सारे भक्तजनों को यात्रियों को, स्नान के द्वारा पहले ही पुनीत करती है।

ऐसे स्वामिपुष्करिणी को हम एक बार दर्शन करके, स्नान करेंगे। पापों को दूर करके पुनीत बन जायेंगे। उस पुष्करिणी को प्रणाम करेंगे।

मकर संक्रांति

- डॉ.सी.आदिलक्ष्मी
मोबाइल - ९९४९८७२१४९

मनुष्य के जीवन में सामान्य और विशेष दो प्रकार के कार्य होते हैं, दो प्रकार के दिन भी। सामान्य कार्य और सामान्य दिन बराबर होते हैं। किन्तु विशेष कार्य और विशेष दिन अपने नियत समय पर आते हैं और उनका विशेष महत्व होता भी है। त्यौहारों का महत्व इसलिए है कि उनमें अनेक विशेषताएँ होती है तथा वे विशेष समय पर आते हैं। भारतवर्ष एक ऐसा देश है जहाँ प्राचीनकाल से वर्णाश्रम-व्यवस्था का पालन होता आ रहा है। मूलतः भारतीय समाज चार वर्णों में विभाजित था। वास्तव में प्रत्येक वर्ण के लोग अपना-अपना त्यौहार मनाते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि हर वर्ण एक ही त्यौहार मनाता है। प्रायः सभी वर्ण के लोग सभी त्यौहारों में भाग लेते हैं और अपना सम्बन्ध सभी त्यौहारों से मानते हैं। हिन्दू-धर्म की यह उदारता है कि किसी भी सांस्कृतिक और धार्मिक पर्व में सभी हिन्दू प्रेमपूर्वक सम्मिलित हो जाते हैं। त्यौहार मानने की प्रथा मानव समाज में अज्ञातकाल से चली आ रही है। भारत में संक्रांति मुख्य रूप से मनाया जाता है। मान्यता है कि अगर मनुष्य संक्रांति की रात्रि को जागरण करता है तो उसे स्वर्गलोक प्राप्त होती है। जब संक्रांति अमावास्या तिथि को पडता है, तब शिव और सूर्य की पूजा करना पडता है। अगर उनकी पूजा की जाती है, तो करनेवाला स्वर्ग को प्राप्त करता है। उत्तरायण में आनेवाले मकर संक्रांति के दिन, प्रातःकाल स्नान करके भगवान श्री केशव की अर्चना करनी होती है। उद्यापन में बत्तीस फल, स्वर्ण का दान देना पडता है। ऐसा करने पर मोक्ष प्राप्त होती है।

मकर संक्रांति (दि. १५.०१.२०२०) के अवसर पर...

संक्रांति भारत के प्रमुख त्यौहारों में से एक है। यह पूरे भारत वर्ष में धूमधाम से मनाया जाता है। इसका पौराणिक एवं वैज्ञानिक महत्व है। इस त्यौहार के दिन लोग सुबह उठकर स्नान करते हैं। इसके पश्चात तिल, गुड़ से बनी मिठाइयों का स्वाद लेते हैं। भारत के कई हिस्सों में इस अवसर पर, विशेष रूप से गुजरात के प्रांत में पतंग उडाने की प्रथा है।

सांस्कृतिक महत्व - इस पर्व को अलग-अलग हिस्सों में भिन्न-भिन्न नाम सुनने को मिलते हैं। असम के यह 'बिहू' के नाम से प्रसिद्ध है, जबकि दक्षिण भारत में इसे 'पोंगल' के नाम से जाना जाता है। वही पंजाब में इसे 'लोडी' के रूप में जानते हैं। उत्तर भारत में इसे

'संक्रांति' भी कहा जाता है। विभिन्न नाम होने के बावजूद, इस पर्व को समान उत्साह एवं हर्ष के साथ मनाया जाता है। इस पर्व का महत्व इसलिए भी है क्योंकि यह उस समय आता है जब खेतों के फसल पकने वाली होती है और किसान उसे काटने की तैयारी के लगा रहता है।

सूर्य की उपासना - संक्रांति मनाने का मुख्य प्रयोजन सूर्य देवता की उपासना है। चूँकि सूर्य ही इस सृष्टि के ऊर्जा का एकमात्र स्त्रोत है, यह पर्व उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने का भी एक सुनहरा अवसर है। इस दिन का प्रारंभ सूर्य पूजा से होती है, इसके बाद स्थानीय व्यंजनों का स्वाद चखा जाता है। पुराने ग्रंथों के अनुसार इस दिन को सूर्य धनुराशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करता है। इसलिए इस त्यौहार को 'मकर संक्रांति' का नाम दिया गया है। उत्तरप्रदेश राज्य में इस दिन को खिचड़ी बनाई जाती है और जिन राज्यों में पवित्र नदियाँ बहती है वहाँ के लोग सुबह उठकर उन नदियों में स्नान करते हैं और सूर्य देवता को नमन करते हैं। इस तरह यह त्यौहार विभिन्न विचारधाराओं और संस्कृतियों का मिलाजुला रूप है।

भारत में प्रमुखतया हर्षोल्लास के साथ मनाये जाने वाले त्यौहारों में से एक मकर संक्रांति है जिसको भारत के प्रत्येक राज्य में एक अलग नाम और संस्कृति के साथ मनाया जाता है। सभी राज्यों में इस त्यौहार को एक अलग नाम दिया गया है- जैसे गुजरात और उत्तराखंड में इस त्यौहार को 'उत्तरायण' के नाम से जाना जाता है। हरियाणा, हिमाचल प्रदेश राज्यों में इस त्यौहार को 'माघी' नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम बिहार में संक्रांति के त्यौहार को 'खिचड़ी' के नाम से मनाया जाता है।

लोगों का मानना है कि इस दिन को जो भी लोग दान, धर्म करते हैं, अन्य दिनों के मुकाबले वे अधिक पुण्य कमाते हैं इसलिए लोग इस दिन को मिठाईयाँ कंबल कपड़े आदि का दान करते हैं।

मकर संक्रांति का यह त्यौहार पूरे भारत के साथ-साथ नेपाल, भूटान, बंग्लादेश जैसे देशों में भी धूमधाम से मनाया जाता है। नेपाल में तो इस त्यौहार के दिन राजकीय अवकाश भी घोषित किया जाता है। यह त्यौहार बसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक होता है। इस समय चारों ओर मौसम खुशनुमा होता है और मौसम में एक अलग ही ताजगी भरी रही होती है। इस दिन कुछ लोग शरबत और पकोड़े भी बांटते हैं। जिन राज्यों से गंगा, यमुना, सरस्वती जैसी पवित्र नदियाँ प्रवाह मान रहती है, वहाँ के लोग सुबह सूर्योदय के समय नदियों में स्नान करते हैं और सूर्य को जल अर्पण करते हैं। उनका मानना है कि ऐसा करने से उनके जीवन की सभी संकट दूर हो जाती हैं। इसी दिन के बाद भारत का सबसे बडा कुंभमेला का आयोजन किया जाता है। यह त्यौहार अपने आप में कई संस्कृतियों एवं विचारधाराओं को लेकर चलता है जो कि समाज के हर वर्ग के लोगों को पसंद आता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार इस दिन से पहले के दिन तक सूर्य का उदय पूर्वदिशा से होकर दक्षिण दिशा में अस्त होता था। लेकिन इस दिन के बाद सूर्य पूर्व दिशा में उदित होकर उत्तरी गोलार्ध में अस्त होता है इसीलिए इसी दिन से रात का समय छोटा होने लगता है और

दिन बड़े होने लगते हैं। इस दिन से बच्चे तथा बड़े सभी पतंग उड़ाने में व्यस्त रहते हैं और साथ ही मिठाइयों और गुलगुले, पकौड़ा का आनंद लेते हैं। महिलाएँ दिन भर सूर्य देवता की कहानियाँ सुनती हैं और व्रत भी रखती हैं। हिंदू धर्म में इसी दिन से सभी शुभ कार्यों का प्रारंभ होता है। तमिलनाडु में यह त्यौहार 'पोंगल' के नाम से मनाया जाता है। इस दिन को किसान फसल काटकर अपने इष्ट देवता को उसका भोग लगाते हैं। वहाँ के लोगों के लिए यह दिन सुख एवं संपन्नता का प्रतीक होता है।

महाराष्ट्र में मकर संक्रांति का त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। यहाँ पर महिलाएँ कपास, नमक और तेल सुवासिनियों को दान देती है। यहाँ की महिलाएँ तिल के लड्डू और गुड भी बांटती है। उनका मानना है कि गुड के लड्डू को बाँटने से लोग मीठा और अच्छा बोलते हैं।

ऐतिहासिक महत्व - पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस दिन को सूर्य भगवान अपने पुत्र शनि से मिलने उनके घर जाते हैं। चूँकि शनिदेव मकर राशि के स्वामी हैं, इसलिए इस दिन को मकर संक्रांति कहा जाता है।

एक अन्य पौराणिक एवं ऐतिहासिक घटना के अनुसार इसी दिन भीष्म पितामह ने अपने प्राणों को त्याग दिया था। मकर संक्रांति की इसी शुभ अवसर पर, गंगा नदी भागीरथ के पीछे चलकर कपिल मुनि के आश्रम से होती हुई सागर तक पहुंची थी। असम के लोग इस त्यौहार को माघ-बिहू या भोगाली बिहू कहते हैं। यहाँ के लोग भी तिल के लड्डू बनाते हैं।

भगवान बालाजी का कृपा-कटाक्ष,
आशीर्वाद आप और अपने परिवार
पर सदा भरपूर रहने के लिए
सप्तगिरि की ओर से लेखक-लेखिकाओं,
एजेंटों एवं पाठकों को
'मकर संक्रांति' की हार्दिक शुभकामनाएँ।

- प्रधान संपादक

सामाजिक महत्व - जैसा कि हमने ऊपर बताया है कि इस त्यौहार को सभी लोग अपने अपने तरीकों और विचारों के अनुसार मनाते हैं। इसलिए इस त्यौहार के कई रंग देखने को मिलते है। यह त्यौहार सुख, संपदा एवं दान देने का त्यौहार है। इस दिन को सभी लोग एक दूसरे से मिलते हैं और बड़े ही धूमधाम से इस उत्सव को मनाते है। यह उत्सव खुशी एवं सौहार्द का प्रतीक है। भले ही लोगों की इस उत्सव को लेकर नाम और संस्कृतियों में विविधता नजर आती हो लेकिन यह त्यौहार लोगों को जोड़ने का काम करता है क्योंकि आजकल लोग भागदौड़ भरी जिंदगी में इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे अपने लोगों से भी मिलने केलिए समय नहीं दे पाते हैं।

जिस प्रकार 'ओणम्' केरलवासियों का महत्वपूर्ण त्यौहार है, उसी प्रकार 'पोंगल' तमिलनाडु और दक्षिण भारत के लोगों का महत्वपूर्ण पर्व है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अधिकांश जनता कृषि के द्वारा आजीविका अर्जित करती है। आजकल तो औद्योगीकरण के साथ-साथ कृषि कार्य को भी मशीनों से किया जाने लगा है। प्राचीन समय में कृषि मुख्यतः बैलों पर आधारित थी। बैल और गाय इसी कारण हमारी संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। भगवान शिव का वाहन बैल है। भगवान श्रीकृष्ण गोपालक के नाम से जाने जाते हैं। हमारे देश में गायों की पूजा माता के समान की जाती है। तमिलनाडुवासी तो पोंगल के अवसर पर विशेष रूप से गाय, बैलों की पूजा करते हैं। यह त्यौहार प्रतिवर्ष मकर संक्रांति के समय मनाया जाता है। लेकिन मुख्य पर्व पूस के महीने को मनाया जाता है। अगहन मास में जब हरे-भरे खेत लहलहाते हैं तो कृषक की स्त्रियाँ अपने खेतों में जाती हैं। भगवान से अच्छी फसल उगवाने की प्रार्थना करती है। इन्ही दिनों घरों की लिपाई-पुताई प्रारम्भ हो जाती है। अमावास्या के दिन सब लोग एक स्थान पर एकत्र होते हैं। अपनी रीति-नीतियों पर विचार करते हैं और जो अनुपयोगी रीति-नीतियाँ है उनका परित्याग करने की प्रतिज्ञा भी करते हैं। पोंगल के दिन तमिलनाडुवासी बुरी रीतियों को छोड़ने की प्रतिज्ञा करते हैं। यह, कार्य 'पोही' कहलाता है। जिसका अर्थ है - 'जाने वाली'। इसके द्वारा वे लोग बुरी चीजों का त्याग करते हैं और अच्छी चीजों को ग्रहण करने की प्रतिज्ञा लेते हैं। पोही के अगले दिन अर्थात् प्रदिपदा को पोंगल की धूम मच जाती है। इस अवसर पर सभी छोटे-बड़े लोग काम में आनेवाली नई चीजें खरीदते हैं और पुरानी चीजों को बदल डालते हैं। नए वस्त्र और नए बर्तन खरीदे जाते हैं। नए बर्तनों में दूध उबाला जाता है। खीर बनाई जाती है। लोग पकवानों को लेकर इकट्ठे होते हैं और सूर्य भगवान की पूजा करते हैं। अन्तःकरण की शुद्धता के लिए सूर्यदेव की प्रार्थना करते हैं।

आज भागदौड़ भरी जिंदगी में त्यौहार ही भारत की सबसे बड़ी शक्ति है क्योंकि त्यौहारों के कारण ही लोग एक दूसरे को जानते हैं। और ऐसी मिलन के द्वारा अपने सुख-दुःख बांटते हैं। इन्हीं त्यौहारों के कारण भारत के लोगों में विभिन्नताएँ होते हुए भी एकता देखने को मिलती है। इन्हीं त्यौहारों में से एक मकर संक्रांति भी है जो कि हिंदू धर्म में अपना एक प्रमुख महत्व रखता है। यह त्यौहार हमेशा लोगों को जोड़ने का काम करते हैं इसीलिए सभी लोगों को त्यौहार अच्छे लगते हैं।

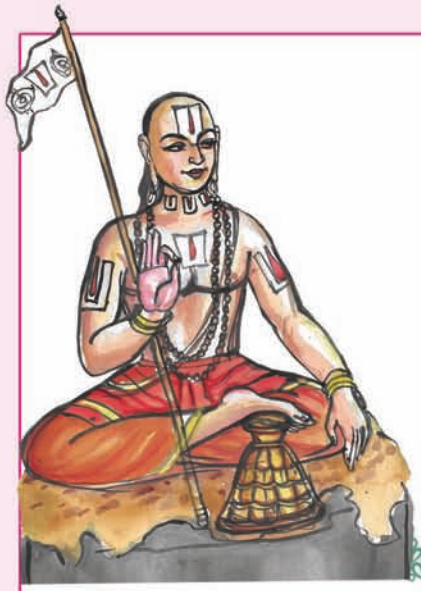

श्री कुरेश स्वामीजी

- श्रीमती उषादेवी अगर्वाल
मोबाइल - ९९०३३८८००५

इस वर्ष का अवतार उत्सव दि. १६ जनवरी २०२०

तिरुनक्षत्र - पुष्य मास - हस्ता नक्षत्र

अवतार स्थल - कूरम्

आचार्य - श्रीरामानुजस्वामीजी

शिष्य - तिरुवरंगत्तमुदानार

परमपद प्रस्थान प्रदेश - श्रीरंगं

ग्रंथ रचना सूची - पञ्च स्तव (श्री वैकुण्ठ स्तव, अति मानुष स्तव, सुन्दर बाहु स्तव, वरदराज स्तव और श्री स्तव), ''यो नित्यम् अच्युत / लक्ष्मी नाथ'' तनियन।

१) कूरम् गाँव के सज्जन घराने में सन् १०१० (सौम्य वर्ष, पुष्य मास, हस्ता नक्षत्र) में कूरत्ताळवार् और पेरुन्देवी अम्माळ को पैदा हुए थे। इनका ''श्री वत्साङ्गन्'' कहके नामकरण किया गया।

२) देवपेरुमाळ की सेवा करने वाले तिरुकच्चि नम्बि से निर्देश प्राप्त करते थे।

३) आण्डाळ से विवाह किया जो उनके समान उत्कृष्ट गुणों से परिपूर्ण थी।

४) श्रीरामानुजाचार्य स्वामीजी का शरण पाकर उनसे पञ्च संस्कार प्राप्त किया।

५) याचकों को भक्तिपूर्वक अन्नदान देकर संतुष्ट करने के लिये उन्होंने विशाल अन्नशाला बनवा रखी थी। जब रात्रि में उसके भारी किवाड़ों को बंद किया जाता था तो मेघ गर्जना के समान एक ध्वनि उत्पन्न होती थी। एक रात श्री वरद वल्लभा अम्माजी ने श्री वरदराज भगवान से इसके बारे में पूछा, और भगवान से श्री कुरेश स्वामीजी के वैभव के बारे में जानकर उनसे मिलने की इच्छा जताई। यह सुनकर श्री कुरेश स्वामीजी ने सोचा मैं कृतघ्न दुरभिमानी और अम्माजी द्वारा मुझ अकिंचन को मिलने की इच्छा? ऐसा विचार कर श्री कुरेश स्वामीजी ने समस्त वैभव त्यागकर निराभिलाषी होते हुये अपनी पत्नी आंडाल के साथ श्रीरंगम की ओर प्रस्थान किया।

मार्ग में जब पता चला की आंडाल ने उनके दुग्ध पान के लिये एक रत्नजड़ित स्वर्ण प्याला साथ में रखा है जो भय का कारण बन रहा है। तब श्री कुरेश स्वामीजी ने वह प्याला फेंक दिया। इसी तरह अपना सारा धन कूरम् में छोड़कर, अपनी धर्मपत्नी के साथ श्रीरंगं पहुँचकर, भिक्षा माँगकर अपना जीवन बिताने लगे।

६) श्री रामानुजस्वामीजी के साथ बोधायन व्रुति ग्रन्थ प्राप्त करने कश्मीर गये। वापस आते समय ग्रन्थ खो जाता हैं और परेशान एवं शोकाग्रस्त श्रीरामानुजस्वामीजी को दिलासा देते है की उन्होंने पूरा ग्रन्थ कंठस्थ कर लिया हैं।

तत्पश्चात् श्रीरंगं पहुँचकर, श्रीरामानुजस्वामीजी का अद्भुत ग्रन्थ ''श्री भाष्यम्'' को ताड़ पत्र में ग्रन्थस्थ करने में सहायता किये।

७) नित्य तिरुवरङ्ग अमुदनार् को उपदेश करके उन्हें श्रीरामानुज स्वामीजी का शिष्य बनाया। साथ ही एकाग्र-रीति के अनुसार अपने (तिरुवरङ्ग अमुदनार् के) आधीन मन्दिर एवं मन्दिर की चाबियों को तदनन्तर श्रीरामानुजस्वामीजी को समर्पित किया। अतः आप ने (तिरुवरङ्ग अमुदनार् के) हृदय परिवर्तन में एहम पात्र का पोषण किया हैं।

८) यतिराज और उनके आदेश से ७४ पीठाधीश्वर ने अहर्निश श्रीवैष्णवता का प्रचार करने में जीवन लगा दिया। सारा भारत श्रीवैष्णवमय हो गया। भगवान को चिन्ता होगयी की अब लीलाविभूति की कोई आवश्यकता नही रहेगी। यह सोचकर भगवान ने अपनी लीला निमित्त भगवद व्देषी महाबलवान चोलराजा को उत्पन्न किया जो आगे चलकर कृमिकण्ठ नाम से कुख्यात हुवा। श्रीरामानुजस्वामीजी के बदले शैव राजा के पास खुद जाकर, उनका दावा ''परमात्म रुद्र ही हैं'' को तर्क से असत्य ठहराया और श्रीमन्नारायण के परत्त्व की स्थापना की। चोलराजा ने जबरदस्ती करने पर भी कुरेश स्वामीजी ने शिव से बढ़कर संसार में अन्य कोई श्रेष्ठ तत्व नही यह नही लिखा तो कुरेश स्वामीजी और महापूर्ण स्वामीजी को राजा ने नेत्रहीन कर दिया। और अंत में श्रीवैष्णव दर्शन (सम्प्रदाय) के लिए खुद अपना दर्शन (आँखों) को खो दिया।

९) श्रीरंगं छोड़कर, तदनन्तर सुंदरगिरि में १२ साल बिताते हैं। सुन्दरबाहु भगवान (तिरुमाळिरुम् शोलै एम्पेरुमान्) के प्रति सुन्दर बाहु स्तवम् का गान करते हैं।

१०) श्रीरामानुजस्वामीजी के आदेश अनुसार, वरदराज भगवान के प्रति वरदराज स्तव गाते हैं और अपने सभी सम्बंधी के लिए मोक्ष की माँग करते हैं विशेष रूप से नालूरान् (जो उनके नेत्र खोने में प्रमुख पात्र थे)। कुल मिलकर पाँच स्तव जो वेद रस से पूर्ण है उनकी रचना करते है - श्री वैकुण्ठ स्तव, अति मानुष स्तव, सुन्दर बाहु स्तव, वरदराज स्तव और श्री स्तव।

११) श्रीरामानुजस्वामीजी इन्हें श्रीरंगं में पौराणिक कैंकर्य करने में नियुक्त करते हैं और उनके समय में अपने सम्प्रदाय के ग्रन्थ निर्वाही (कालक्षेपाचार्य) के रूप में सेवा करते थे।

१२) श्रीरंगनाथजी से महा प्रसाद प्राप्त करते हैं और प्रसाद पाने से उन्हें दो सुन्दर शिशु जन्म होते हैं। उन्हें पराशर और वेद व्यास भट्टर का नामकरण करते हैं।

१३) दिव्यप्रबन्ध अनुभव में इतने मस्तमज्जक होते थे कि जब कभी भी उपन्यास शुरू करते हैं, वह अनुभव से अपने आँखों में आसु भर देते थे या वह मूर्छित हो जाते थे।

१४) श्रीरंगनाथ भगवान इनसे वार्तालाप करते थे।

१५) आखिर में श्रीरंगनाथ भगवान से मोक्ष की प्रार्थना करते हैं और श्रीरंगनाथ भगवान

उनकी विनती को स्वीकार करते हैं। श्रीरामानुजस्वामीजी उनसे पूछते हैं ''कैसे आप मेरे से पहले जा सकते हैं?'' उत्तर देते हुए कहते हैं ''तिरुवाय्मोळि के शूळ विसुम्बणि मुगिळ के अनुसार जब एक जीवात्मा परमपद प्रस्थान होते हैं तब नित्य मुक्त लोग स्वागत करते हुए उनकी पाद-पूजन करते हैं। आप मुझसे ऐसा पेश आना इससे मैं असहमत हूँ। इसीलिए मैं आपसे पहले निकल रहा हूँ।''

कूरत्ताळ्वान् का तनियन

श्रीवत्स चिह्न मिश्रेभ्यो नम उक्तिम दीमहेः।

यदुक्तयः त्रयि कण्ठे यान्ति मङ्गल सूत्रताम्।।

मैं श्री कूरत्ताळ्वान् का नमन करता हूँ, जिनके पाँच स्तव वेदों के मंगल सूत्र के समान हैं और जिनके ज्ञान के बिना परदेवता के बारे में स्पष्टता नहीं मिलती।

श्रीरामानुजस्वामीजी के प्रधान शिष्यों में से श्री कुरेश स्वामीजी एक हैं। काञ्चीपुरम के कूरम् गाँव में एक सज्जन कुटुंब में इनका जन्म हुआ हैं। इन्हें श्रीवैष्णव आचार्य के प्रतीक माना जाता हैं। श्रीरामानुजस्वामीजी के, श्री कुरेश स्वामीजी यज्ञोपवीत के तथा श्री दाशरथी स्वामीजी त्रिदण्ड के प्रतीक है। आप श्री, तीन विषयों का घमंड न होने के कारण सुप्रसिद्ध एवं सर्वज्ञात हैं (अर्थात् अपने पढ़ाई यानि ज्ञान पे, एवं धन पे और कुल पे गर्व करना)। तिरुवरङ्गतु अमुदनार रामानुज नूट्रन्दादि में आप श्री की प्रशंसा करते हुए गाते हैं ''मोळिइयै कडक्कुम् पेरुम् पुगळान् वन्ञ मुक् कुरुम्बाम् कुळियै कडक्कुम् नम् कूरत्ताळ्वान्'' और यतिराज विंशति में श्रीवरवर मुनि स्वामीजी ने ''वाचामगोचर महागुण देशिकाग्र्य कूराधिनाथ'' कहके कीर्तन किया हैं। अर्थात् यहाँ सूचित करते हैं कि उनकी वैभवता को शब्दों में वर्णन करने में अशक्तता हैं।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

तिरुमल की पहली देहली 'देवुनि कडपा'

तेलुगु मूल - श्री पी.नागांजनेयुलु

हिन्दी अनुवाद - डॉ.एच.एन.गौरीराव

मोबाइल - ९७४२५८२०००

हमारे राज्य में अनेक पुण्यक्षेत्र हैं। इन प्रमुख क्षेत्रों में कडपा जिले की 'देवुनि कडपा', श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वरस्वामी का मन्दिर एक है। यह अति विख्यात एवं पुराण प्रसिद्ध पर्याटक क्षेत्र है। यह मन्दिर तिरुमल की पहली देहली भी मानी जाती है। इस मन्दिर की अनेक विशेषताएँ ''कडपा कैफियत'' में मिलती हैं। जैसे तिरुमल का क्षेत्रपाल वराहस्वामी है, तो देवुनि कडपा का क्षेत्रपाल श्री हनुमानजी हैं।

जनमेजय द्वारा प्रतिष्ठापन - 'कडपा कैफियत' में उल्लेख है कि देवुनि कडपा, श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्वामी की मूलमूर्ति को स्वयं जनमेजय ने प्रतिष्ठित किया है। इन उल्लेखों से यह पता चलता है कि पहले यह प्रान्त 'देवुनि कडपा' कहा जाता था, कालांतर में यह 'गडपा' कहलाने लगा। बताया जाता है कि जनमेजय अनेक पुण्यक्षेत्रों का दर्शन करते हुए तिरुमल पहुँचे। भगवान के दर्शन के बाद उस रात को वे वहीं सो गये। उसके स्वप्न में भगवान प्रत्यक्ष हुए तथा आदेश दिया कि ''तिरुमल के पास एक तालाब को खोदने पर एक मूर्ति मिलेगी, उसको एक पवित्र स्थान पर स्थापित करना।'' सुबह जनमेजय को तालाब में गडी हुई श्री वेंकटेश्वरस्वामी की मूर्ति मिली और उस मूर्ति की स्थापना के लिए ठीक स्थान ढूँढते हुए वहाँ से चल पड़े।

यह जानकर कि तिरुमल की वायव्य दिशा में १० आमड (१० मील १ आमड़ है) की दूरी पर पुष्करिणी सहित वायुपुत्र हनुमान का क्षेत्र है, जनमेजय ने सोचा कि मूर्ति को वहाँ स्थापित करना ठीक होगा। इसका दृष्टांत यह है कि आज भी मन्दिर में मूलमूर्ति के पीछे दस कदम ऊँची हनुमान की प्रतिमा है। पहले यह कडपा 'वेंकटेश्वर्लू' के नाम से पुकारा जाता था। शिव का अंश ही हनुमान होने के कारण भगवान बालाजी के मंदिर के साथ-साथ शिव के मन्दिर का भी निर्माण किया गया।

इस आलय का मुख मंडप अद्भुत शिल्प सौंदर्य से शोभित है। वार्षिक ब्रह्मोत्सव के समय में रंगमंडप तथा प्रांगण के अन्य मन्दिर अत्यन्त मनोहर दिखाई देते हैं। रंगमंडप में नृत्य, संगीत से सम्बन्धित अनोखे शिल्प हैं, जो उस समय के कला प्रदर्शन को याद दिलाते हैं। इसके अलावा यहाँ हनुमानजी, दशावतार तथा महर्षियों के शिल्प भी हैं।

इस मन्दिर में कई शासन हैं जो आज भी, अपनी विशिष्टता को बनाये रखे हुए हैं। इनमें मन्दिर का

इतिहास, राजाओं के आध्यात्मिक चिन्तन तथा उनके द्वारा आलय की व्यवस्था आदि के बारे में थोड़ा प्रकाश डाला गया है। ऐतिहासिक विवरण कम होने से इसका बहुत प्रचार नहीं हुआ है। 'कडपा जिला शासन ग्रंथ' तथा 'कडपा कैफियत' से मन्दिर के बारे में थोडा विवरण मिलता है। २००७ ई. में यह मन्दिर को तिरुमल तिरुपति देवस्थान के अंतर्गत लाया गया है।

वैकुण्ठ धाम - भगवान श्रीनिवास का प्रतिरूप ही कडपा वेंकटेश्वर स्वामी है। इससे यहाँ का क्षेत्र 'देवुनि कडपा' भी भूलोक में वैकुण्ठ धाम है। तिरुमल का 'पहली देहली' कहे जानेवाले इस क्षेत्र में स्थित श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर स्वामी की पूजा करना तिरुमल के श्री वेंकटेश्वर

की पूजा करने के समान है। भक्त तिरुमल को जाने से पहले यहाँ भगवान का दर्शन करना एक रिवाज है। उत्तर से जो भक्त आते थे, वे इस जगह पर थोड़ा विश्राम लेके भगवान के दर्शन के बाद तिरुमल जाते थे। अगर कोई किसी कारणवश तिरुमल नही जा सकते तो वे यहाँ श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्वामी का दर्शन करके अपनी इष्टार्थ प्राप्त करते थे। यह प्रथा आज भी चलती है।

मन्दिर में - मन्दिर में गर्भगृह के सामने रंगमंडप में शिल्प सौंदर्य अद्वितीय है। यहाँ भक्त बैठकर शान्तिचित्त हो जाते है। आलय के उत्तर में दीवार के पास वृक्ष के नीचे नाग की मूर्तियाँ है। उसके बगल में दक्षिण दिशा में सर्वसेनानी विश्वक्सेन तथा गणेश मंदिर है। उत्तर के द्वार के पास पश्चिमी दिशा में आण्डाल देवी का मन्दिर है। इस जगह पर भी मण्डप तथा दीवार शिल्पों से विराजित है। श्री वेंकटेश्वर की पूजा से पहले भक्तों से इन मन्दिरों में पूजा की जाती है।

पादमंडप - राजगोपुर से मन्दिर जाते समय सामने पादमंडप दिखाई देता है। यहाँ भगवान की पादुकाएँ है, इन पर पीतल का कवच है। भक्त इन पादुकाओं का दर्शन करके परिक्रमा (प्रदक्षिणा) करके पीछे बलिपीठ के पास नारियल भगवान को समर्पित करने के बाद रंगमंडप के सामने विद्यमान ज्योति मंडप में दीप जलाके नमस्कार करते है। आलय के दक्षिण गोपुर के पास विशाल कक्षा में आल्वारों की मूर्तियाँ है। इसी मन्दिर में प्राचीन चेन्नकेशव की मूर्ति है। भगवान के दर्शन के बाद भक्त चेन्नकेशव की अर्चना करते है। उत्तर द्वार पर पुरातन शमी वृक्ष है। भक्त यहाँ सन्तान प्राप्ति तथा अपनी मनौतियाँ माँगते हुए शमी वृक्ष की प्रदक्षिणा करते है।

छिपकलियाँ - साधारणतया छिपकली के दोष निवारणार्थ लोग कंचि जाके स्वर्ण छिपकली को स्पर्श करते है। कंचि के बाद सिर्फ इस मन्दिर में माता के मन्दिर के द्वार के ऊपर पत्थर की दो छिपकलियाँ है। जो लोग कंचि नहीं जा सकते है, वे इन दो छिपकलियों को स्पर्श करके, दोषमुक्त हो जाते है। माता के दर्शन के बाद इन छिपकलियों को स्पर्श करते है।

पुष्करिणी - देवुनि कडपा के मन्दिर के सामने एक पुष्करिणी है जो जिले में सबसे बडा है। इसके एक ओर श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वरस्वामी मन्दिर तथा दूसरी ओर श्री सोमेश्वर स्वामी मन्दिर है। यह पुष्करिणी दोनों मन्दिरों से सम्बन्धित है। इस पुष्करिणी से सम्बन्धित विवरण मन्दिर के दीवारों पर तथा अभिलेखों में है।

चार कडपाये - आरंभ में यहाँ केवल 'देवुनि कडपा' ही था। मन्दिर और पेन्ना नदी के बीच की भूमि में कृषि करने के लिए नदी के तट पर कापु (कृषक) अपना आवास बनाया। यह ''कापु कडपा'' है। एक बार नदी में बाढ आने से गाँव बह गया। ग्रामवासी मन्दिर के एक फर्लांग दूर पर अपना आवास बनाया। नवाब जब इस प्रान्त का पालक बने 'कडपा शहर' का निर्माण किया। अपने सैनिकों के बिना और कोई नहीं रहने से नवाबों ने अर्चकों को कुटुम्ब समेत आने का निमंत्रण दिया। आचार तथा साम्प्रदायिकता की भिन्नता के कारण से अर्चकों ने इस आह्वान को टुकरा दिया। इससे नवाबों ने अर्चकों को अनेक सुविधाएँ देकर हनुमान जी का मन्दिर भी बनवाया। वह ब्राह्मण गली (ब्राह्मण वीधि) बन गया। इस प्रकार देवुनि कडपा को पहला कडपा, जो भूमि बाढ में नष्ट हुई उसको दूसरा कडपा, तीसरा कापु कडपा (पुरानी कडपा), कडपा शहर को चौथा कडपा पुकारने लगे। ब्रह्मोत्सव के समय एक दिन 'देवुनि कडपा' में दूसरे दिन 'कडपा शहर' में उत्सव मनाये जाते है।

ब्रह्मोत्सव - देवुनि कडपा श्री लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्वामी मन्दिर के वार्षिकोत्सव हर वर्ष माघशुद्ध पाड्यमी से नवमी तक आडम्बरता पूर्वक मनाया जाता है। मन्दिर के अर्चक तथा तिरुमल तिरुपति के वेद पण्डित ''दीक्षा तिरुमंजन'' कार्यक्रम का आयोजन करते है। पहले विश्वक्सेन की पूजा की जाती है। पुण्याहवाचन, रक्षा कंकणधारण के बाद पालकी को जुलूस होकर पुष्करिणी के पास लाकर शास्त्रोक्त पूजाविधि की जाती है। फिर

पालकी को मन्दिर में लाके अंकुरार्पण करते है। उत्सवों में गरुड तथा हनुमान वाहन सेवाओं को देखने के लिए अशेष भक्त आते है। कल्याणोत्सव तथा पुष्पयाग भी मनाया जाता है। रथोत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।

रथोत्सव - रथोत्सव के समय देवुनि कडपा भक्तों से भर जाता है, इस रथ को केवल देवुनि कडपा तथा पुरानी कडपा की जनता खींचती रहते हैं। खींचने की भी एक पद्धति है। यह प्रथा अनेक सदियों से चलती आ रही है। रथोत्सव के दिन सुबह बाजा बजंत्री के साथ मन्दिर के अधिकारी जुलूस होकर देवुनि कडपा और पुरानी कडपा के कुछ प्रमुख व्यक्तियों को आमंत्रण देते है। शाम को इन दो ग्रामों के प्रमुख तथा युवक रथ की पूजा करके नारियल समर्पित करते है। रथ को आरती करके रक्ष चक्र के नीचे लकडियों को थोड़ा झुकाके रखते है। उस पर खडे होकर एक बडे लाठी को आधार बनाके गोविन्द नाम स्मरण करते हुए रथ को खींचते है। कुछ भक्त चक्र के नीचे कुम्हाडों को रखते है, उसके पीसने के बाद प्रसाद के रूप में स्वीकारते है। मन्दिर के अधिकारी रिवाजों में कुछ परिवर्तन लाने का प्रयत्न किया। जनता विरोध करने से पुरानी परम्परा को ही चालू रखा।

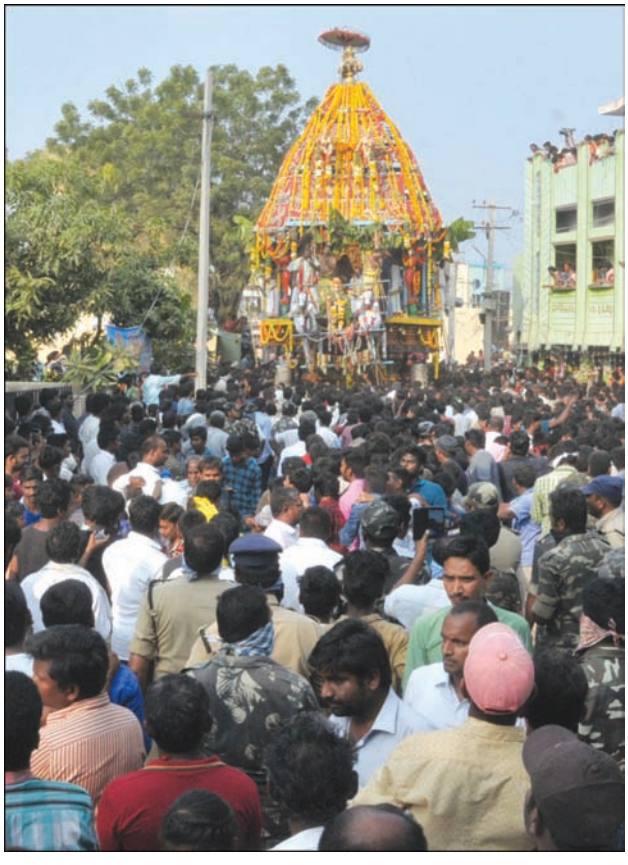

उत्सव - वैकुण्ठ एकादशी के दिन, वेंकटेश्वर स्वामी तथा पद्मावती देवी के उत्सवमूर्तियों को वैकुण्ठ द्वार के पास रखकर भक्तों को उत्तर द्वार से दर्शन करने का मौका दिया जाता है। तेलुगु संवत्सरादि युगादि के दिन मन्दिर में विशेष अलंकार होता है तथा अनेक भक्त आकर दर्शन करवाते है। युगादि के दिन मन्दिर के पण्डितों से पंचांग श्रवण किया जाता है।

ब्रह्मोत्सव - हर साल माघ शुद्ध पाड्यमी से नवमी तक कडपरायुनि ब्रह्मोत्सव आयोजित किया जा रहा है। इस साल जनवरी २५, २०२० से ब्रह्मोत्सव प्रारंभ हो रही है। अंकुरार्पण महोत्सव से ब्रह्मोत्सव शुरू होते है।

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों से किसी न किसी का एक पर्याय में १०८ बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

(गतांक से)

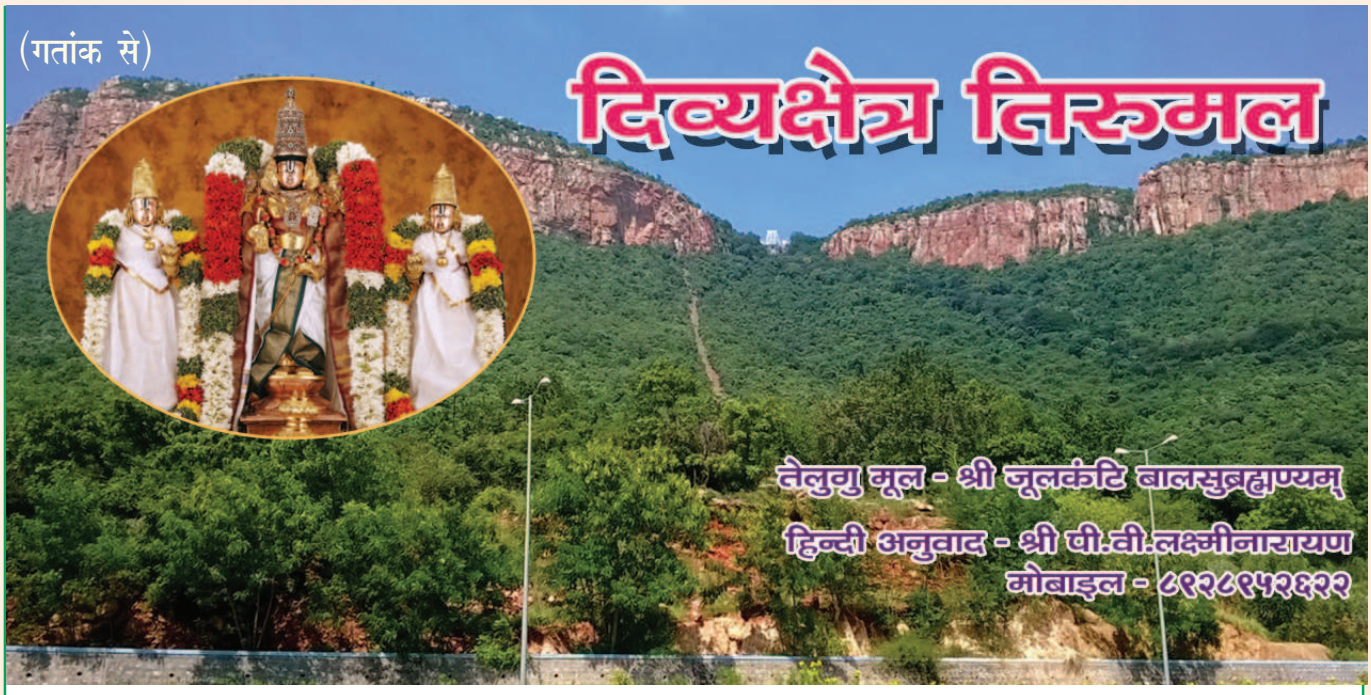

दिव्यक्षेत्र तिरुमल

तेलुगु मूल - श्री जूलकंटि बालसुब्रह्मण्यम्
हिन्दी अनुवाद - श्री पी.वी.लक्ष्मीनारायण
मोबाइल - ८९२८९५२६२२

वल्मीक से श्रीनिवास का प्रकटन

राजा आकाश के अहीर ने उस दिन ब्रह्मा-रूपी दुधारी गाय का चरगाह में अनुसरण किया। यथाप्रकार वह गाय महाविष्णु के वल्मीक में दूध का स्रवण करने लगी। पशु-पालक विस्फारित नेत्रों से देख रहा था। अपने को दूध न देकर धोखा देती हुई गाय पर उसने हठात् अपने हाथ की कुल्हाड़ी फेंकी। कुल्हाड़ी गाय को लगने ही वाली थी, मगर अंतिम क्षण में वह परें हट गयी!

वल्मीक के अंदर श्रीदेवी के ध्यान में बैठे महाविष्णु महाशय की प्रशांतता एवं एकाग्रता बाहर के इस संघर्ष एवं शोरगुल पर भंग पड़ गयीं और वह बाँबी से झट उठ खड़ा होगया। उसके दृढ़ दीर्घ बाहुओं तथा अप्रतिम शारीरक बल के प्रभाव से वह वल्मीक फूट कर मिट्टी के टुकडे तितर-बितर होकर इधर-उधर उछल पड़ गये। काफी हंगामा मच गया।

ऐसे माटी की बाँबी से हठात् उठ खड़े हुए महाविष्णु के शिर पर अहीर की फेंकी हुई कुल्हाड़ी बलात् जा लगी!! वह योगीमहराज ''आँह!!'' कह कर जोर से कराहते हुए अपने दाँये हाथ से

फालभाग को पकड़ कर, बहते हुए खून को रोकने का प्रयास करने लगा!

इस तरह आप कुल्हाड़ी मारते ही बाँबी से एक तेजोवान, आजानुबाहू पुरुष का हठात् उठ प्रकट हो जाने एवं उस धीर पुरुष के भाल पर कुल्हाड़ी के घात से जोरदार रुधिर के लाल-लाल प्रवाह के बहने से अहीर भीतावह बन गया। वह थर-थर काँप उठा और एकदम जोर से चीखमार कर, मर कर उसी घटना-स्थल पर मर गिर गया!! वैकुंठ के यजमानी श्रीमन्महाविष्णु के कलियुग के इस प्रथम पाद में भूलोक पर प्रकट होने के उपलक्ष पर श्रीस्वामी के अवतार पर मानो नजर-उतार कर देवताओं ने राजा आकाश के पशु-पालक को फेंक दिया हो!!

राजा चोल को शाप

चटाक्-से गिर पड़े पशु-पालक की मृत्यु एवं वल्मीक से प्रकट तेजस्वी धीर युवक की बात फटाफट उस देश, नारायणवनम् के चोलराजा के पास पहुँची, तो राजा एकदम अचंभे में डूब गया। वह निर्विण्ण एवं अवाक् रह गया। काफी देर के पश्चात् वह अपने परिवार के लोगों को साथ लेकर उस जगह पर पहुँचा, जहाँ महाविष्णु चरवाहे के हाथ चोट खाकर, दायें हाथ से भाल पकड़ कर अभी भी स्थाणू बनकर खड़ा है।

चोलराजा सरासर जाकर महाविष्णु के पैरों तले पड़ कर, क्षमा-याचना की, मगर विष्णुदेव ने उसे क्षमा कर नहीं पाया, क्योंकि उसका ध्यान-भंग हो गया था। विष्णु ने तीव्र मनोवेदना के साथ राजा को शाप दे दिया कि वह पिशाच बन जाये!

इस घनघोर शाप पर राजा ने गिड़गिड़ाते हुए शाप-विमोचन माँगा, तो महात्मा विष्णुभगवान ने उस अकिंचन पर तरस खायी और इस प्रकार कहा, ''राजन्! तेरे चरवाहे ने मुझ तापसी पर जोरदार वार कर काफी अक्षभ्य अपराध किया है, अतएव तुझे यह दंड देना पड़ा! मैं आगामी काल में श्रीनिवास नाम से तेरे ही वंश के राजा आकाश की पुत्री पद्मावती से ब्याह रचा कर, दामाद बनूँगा। उस श्रृंखला में राजा आकाश मुझे एक स्वर्ण-मुकुट पहनावेगा, तो तब तेरी मुक्ति सिद्ध हो करके, तू वैकुंठ में पहुँच कर मेरा परिचारक बन कर मनोगे!!''

श्रीनिवास का आविर्भाव

इस प्रकार भृगुमहर्षि के पाद-ताड़न से विकटित दाम्पत्य-वैकल्य से संतप्त श्रीमन्महाविष्णु वराहक्षेत्र में एक बाँबी में लक्ष्मीदेवी का निरंतर ध्यान करते हुए बसा था। अतएव उसका सारा हृदय

'श्री' यानी लक्ष्मीदेवी से भर गया था। 'श्री' से भरे या निवासित हृदयवाला वह महाविष्णु बन गया था। अतः तब से विष्णु भगवान ''श्रीनिवास'' बन गया था। श्रीनिवास को कवियों ने ''श्रियध्यासित वक्षसम्'' कहते हुए सराहा था, जिसका अर्थ - लक्ष्मीदेवी का स्मरण करने का हृदय रखने वाला होता है!!

श्रीनिवास आगामी व आयिंदा दिनों में तिरुमलगिरि में बस कर एक महान् कलिधर्म-पीठ की स्थापना कर, कलियुग के त्रस्त लोगों को अभय देता रहा। तिरुमल दिव्यधाम धन-संपदाओं से भरे-पूरे, कलियुग वैकुंठ बन कर विराजमान है, जिसका प्रमुख कारण श्रीस्वामी के हृदय-स्थल पर संपदाओं की साम्राज्ञी श्रीमन्महालक्ष्मी का बस जाना है!!

ग्वालवंश को वरदान

पावन गंगानदी के तट पर कलिशांति यज्ञ करने वाले ऋषि-मुनियों ने कलियुग की रक्षा-हेतु भृगुमहर्षि के जरिये श्रीमन्महाविष्णु को भूलोक में बुलाया, अर्थात् आने पर उसे मजबूर कर दिया!! विष्णु भूलोक सिधारा। तपोध्यान में मगन होगया। गाय आ करके वल्मीक में दूध स्रवित करती थी। गुस्से में आकर अहीर ने गाय पर कुल्हाड़ी से वार कर दिया; गाय टल गयी, मगर श्रीनिवास को कुल्हाड़ी का घात लग गया।

भूलोक में श्रीमहाविष्णु को श्रीनिवास में बदलते हुए जिस किसीने भी सर्व प्रथम देखा, तो वह अहीर व पशुपालक गोपाल था। अहीर ग्वालकुल का होता है। अत एव श्रीनिवास-रूपी श्रीमहाविष्णु को सर्व प्रथम दर्शन करने वाला यही ग्वाल मनुष्य था। यही कारण है कि आज भी तिरुमल दिव्यधाम में प्रातः जब श्री बालाजी भगवान के मंदिर का द्वार खोलते ही सर्व प्रथम श्रीपति का दर्शन भाग्य ''सन्निधि गोल्ला'' यानी आस्थान ग्वाल को ही दिया जाता है। सन्निधि गोल्ला के दर्शन कर, तीर्थ-प्रसाद आदियों के स्वीकारने के उपरांत ही अन्य अधिकारीगण और भक्तजनों का श्रीस्वामी के दर्शन का अवकाश दिया जाता है!!

श्रीनिवास का वराहस्वामी से भेंट

श्रीनिवास के इस कुल्हाड़ी के हादसे के पश्चात्, वह वही वराहक्षेत्र पर घूमता रहा। एक दिन श्रीनिवास की आदिवराहस्वामी वाले महानुभाव से मुढभेड़ हो गयी!! आदिवराहस्वामी इस सारे वराहक्षेत्र का हकदार था। वराहक्षेत्र की सारी जमीन-जायदाद उसी की होती थी!

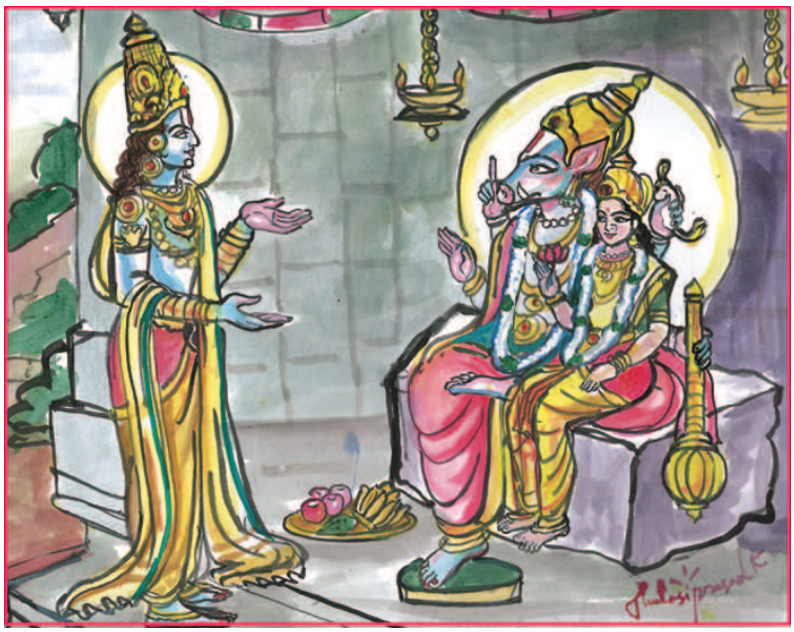

निर्लिप्त एवं निराशा-भरे मन लेकर अपने क्षेत्र में विचरते श्रीनिवास को टोक कर आदिवराहजी ने यों सवाल किया? –

''ऐ मानव! कौन हो तुम? काहे इस वीरान क्षेत्र में फिर रहे हो?''

श्रीनिवास ने आँख उठा कर अपने प्रत्यर्थी को देखा और जवाब दिया, ''आवास ढूँढता हूँ, पुराण-पुरुष! यहाँ वैकुंठ बसाने का इरादा है!!''

इस जवाब से वराहस्वामी को ज्ञात हो गया है कि अपने क्षेत्र में बेधड़क घूमता यह व्यक्ति साक्षात श्रीमन्महाविष्णु है। श्रीवराहजी की अपनी चेतना श्रीनिवास की सर्व शक्तिमय चेतना से मिल गयी और उन दोनों की शक्तियों में एकरूपता व सारूपता का संगम दृग्गोचर होगया!! एक में एक मिल गया और एकाकार की साधना सिद्ध हुई!

वराहस्वामी ने श्रीनिवास को एक गंडशिला पर आसीन कराया और कहा, ''महात्मा! यह क्षेत्र मेरा है, तो तेरा भी है! इस वराहक्षेत्र पर तुम अवश्य बस जाओ और यहाँ से कलियुग का निरीक्षण करो!!''

श्रीनिवास ने अपने चिरंतन प्रतिरूप को गौर से देखते हुए कहा, ''महाबली!! धन्यवाद! यहाँ मैं अपने समस्त परिवार-समेत कलियुगांत-तक वास करूँगा। यही मेरा निज कार्यस्थल होगा! यहीं से समस्त लोक-पालन होगा। त्रस्त भक्त जो यहाँ मेरा दर्शनार्थ आयेगा, सो सर्व प्रथम तेरा दर्शन करेगा-अनुमतिपूर्वक और तत्पश्चात् ही वह मेरा दर्शन करने आयेगा। यह है मेरी प्रत्याभूति!!''

(क्रमशः)

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिनमें विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

(गतांक से)

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - ९४०३७२७९२७

शुरक्कुम् तिरुवु मुणर्वुम्, शोलप्पुहिल् वायमुदम्
परक्कुम् इरुविनै पत्तर वोडुम्, पडियि लुळ्ळीर्
उरैक्किन्नन नुमक्कु यान् अरम्शीरु मुरुकलियै
तुरक्कुम् पेरुमै, इरामानुजनेन्नु शोल्लुमिने ॥४३॥

भो भौमा जानाः। अहं वः किमपि हितं वच्मि निशमयत; धर्ममार्गक्षोभजनक कलिपुरुषध्वंसको भगवान रामानुज इति संकीर्तयध्वम्; तथा नाम कीर्तने संपच्च विज्ञानं च विवर्धेयाताम्; वाचि अमृतरसप्रवाहश्च पुष्येत्; महापातकानि चात्यन्तिकविनाशमधिगच्छेयुः॥

हे भूतल निवासी जनों! मैं तुमसे एक हित वचन कहूंगा; सुनो। धर्ममार्ग पर नाराज होनेवाले प्रबल कलिपुरुष का ध्वंस करने वाले श्रीरामानुजस्वामीजी के शुभ नामों का संकीर्तन करो। उससे भक्तिसंपत् और ज्ञान बढेंगे; नामसंकीर्तन करने के प्रारंभ में ही जीभ में अमृतरस बहेगा और महापाप समूल नष्ट हो जायेंगे।

क्रमशः

जनवरी २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

फरवरी २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

मार्च २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30	31				

जनवरी २०२०

०१. नूतन अंग्रेजी वर्ष
०६. वैकुंठएकादशी
०७. श्रीस्वामिपुष्करिणी तीर्थमुक्कोटि
१४. भोगी, भोगीतेरु
१५. मकर संक्रांति
१६. कनुमा, श्री गोदादेवी का परिणयोत्सव
२४. श्रीपुरन्दरदास आराधन महोत्सव
२६. भारतगणतंत्र दिवस
३०. वसंतपंचमी

फरवरी २०२०

०१. रथसप्तमी
०५. भीष्म एकादशी
०९. श्री रामकृष्ण तीर्थमुक्कोटि
१४ से २२ तक श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
१४ से २३ तक तिरुपति
श्री कपिलेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
२१. महाशिवरात्रि

मार्च २०२०

०२ से १० तक तरिगोंडा
श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामी का ब्रह्मोत्सव
०५ से ०९ तक तिरुमल
श्री बालाजी का प्लवोत्सव
०९. कुमारधार तीर्थमुक्कोटि, होली
१०. लक्ष्मीजयंती
२१. अन्नमाचार्यवर्धंती
२३ से ३१ तक तिरुपति
श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव
२३ से २७ तक नागलापुरम्
श्री वेदनारायणस्वामी का प्लवोत्सव.
२७. श्री मत्स्यजयंती
२५. श्री शार्वरि नाम संवत्सर उगादि

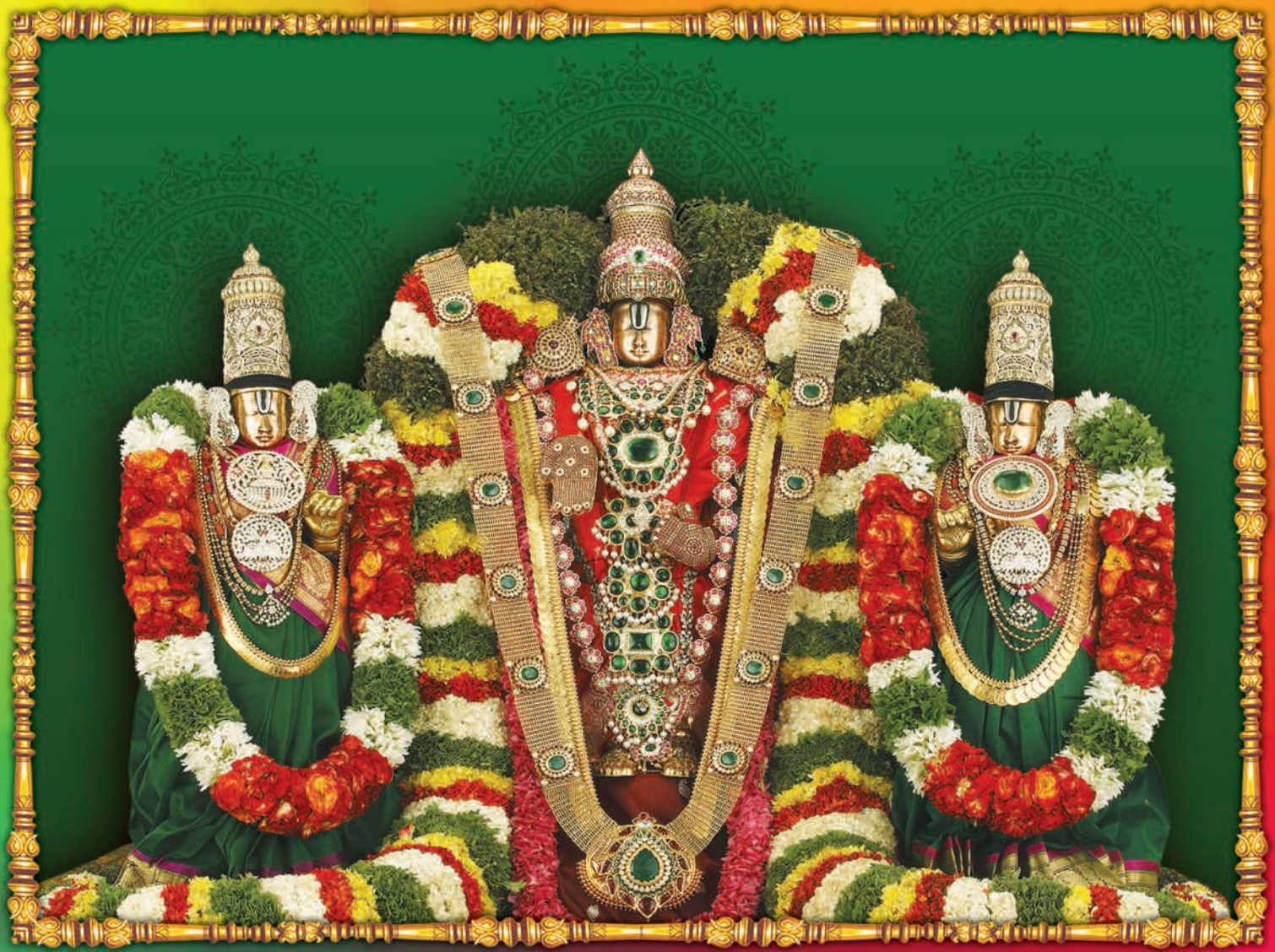

अप्रैल २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30		

मई २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
31					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

जून २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

अप्रैल २०२०

०२. श्रीरामनवमी
०२ से १० तक ओंटिमिट्टा
श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव
०३. तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामी का
कल्याणोत्सव
०५ से ०७ तक तिरुमल बालाजी का वसंतोत्सव
०७ तुंबुरुतीर्थमुक्कोटि
१४. तमिल नूतन वर्ष,
डॉ.बी.आर.अम्बेद्कर जयंती
२५. श्रीपरशुरामजयंती
२६. अक्षयतृतीया
२७. श्रीशंकरजयंती
२८. श्रीरामानुज जयंती

मई २०२०

०१ से ०३ तक तिरुमल श्री पद्मावती श्रीनिवास का
परिणयमहोत्सव
०५ से ०८ तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का वसंतोत्सव
०५ से १३ तक नागलापुरम् श्री वेदनारायणस्वामी का ब्रह्मोत्सव
०६. श्री नरसिंह जयंती, तरिगोंडा वेंगमांबा जयंती
०७. श्री कूर्म जयंती, ०८. श्री अन्नमाचार्य जयंती
१२. गंगजातरा (मेला)
१५ से २३ तक कार्वेटिनगरम्
श्री वेणुगोपालस्वामी का ब्रह्मोत्सव
१७. हनुमज्जयंती
२८ से जून ०५ तक तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामी का
ब्रह्मोत्सव

जून २०२०

०१ से ०५ तक तिरुचानूर
श्री पद्मावतीदेवी का प्लवोत्सव
०२ से १० तक ऋषिकेश, नारायणवनम्
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
०२ से १० तक अप्पलायगुंटा
श्री प्रसन्नवेंकटेश्वरस्वामी का ब्रह्मोत्सव
०४ से ०६ तक तिरुमल
श्री बालाजी का ज्येष्ठाभिषेक
२५ से २७ तक श्रीनिवासमंगापुरम्
श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी का साक्षात्कार वैभव

जुलाई २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

अगस्त २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
30	31					1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

सितंबर २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

जुलाई २०२०

०१ से ०३ तक तिरुपति
श्री गोविंदराजस्वामी का ज्येष्ठाभिषेक
०१ से ०४ तक तिरुपति
श्री कपिलेश्वरस्वामी का पवित्रोत्सव
०५. गुरुपूर्णिमा-व्यासपूजा
१५ से १८ तक तिरुपति
श्री कोदंडरामस्वामी का पवित्रोत्सव
१६. तिरुमल आणिवर आस्थान
२४. नागचतुर्थी २५. गरुड पंचमी
२९ से अगस्त ०१ तक तिरुमल श्रीबालाजी का
पवित्रोत्सव
३१. वरलक्ष्मीव्रत

अगस्त २०२०

०३. श्री विखनसाचार्य जयंती,
श्री हयग्रीव जयंती, रासी
०४. गायत्रीजप
१२. गोकुलाष्टमी
१५. भारत स्वतंत्रता दिवस
२०. श्री बलराम जयंती
२१. श्री वराह जयंती
२२. श्री गणेश चतुर्थी
२९. श्री वामन जयंती
३० से सितंबर ०२ तक तिरुचानूर
श्री पद्मावतीदेवी का पवित्रोत्सव

सितंबर २०२०

०१. श्री अनंतपद्मनाभव्रत
०५. गुरुपूजोत्सव

१९ से २७ तक तिरुमल
श्री वेंकटेश्वरस्वामी का वार्षिक ब्रह्मोत्सव
२३. तिरुमल बालाजी का गरुडसेवा
२४. तिरुमल बालाजी का सुवर्ण रथरंग डोलोत्सव

अक्तूबर २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

नवंबर २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

दिसंबर २०२० श्रीवेंकटनिवासाय श्रीनिवासाय मंगलम्!!

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

अक्तूबर २०२०

- ०२. गांधी जयंती
- १६ से २४ तक तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामी का नवरात्रि ब्रह्मोत्सव
- २०. तिरुमल बालाजी का नवरात्रि गरुडसेवा
- २१. तिरुमल श्रीहरि का पुष्पकविमान, सरस्वतीपूजा
- २३. तिरुमल श्रीहरि का स्वर्ण रथोत्सव
- २४. दुर्गाष्टमी, महानवमी
- २५. विजयदशमी

नवंबर २०२०

- ११ से १९ तक तिरुचानूर श्री पद्मावतीदेवी का ब्रह्मोत्सव
- १४. नरक चतुर्दशी, दीपावली, बाल दिवस
- १५. श्री केदारगौरीव्रत
- १८. नागुलचवितिति
- १९. पंचमीतीर्थ
- २०. तुंगभद्रानदी पुष्कर प्रारंभ
- २१. तिरुमल बालाजी का पुष्पयाग
- २५ से २९ तक नारायणवनम् श्री कल्याणवेंकटेश्वरस्वामी का प्लवोत्सव
- २७. वैकशिकद्वादशी आस्थान

दिसंबर २०२०

- ०३. तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का लक्ष बिल्वार्चन
- १२. धन्वन्तरीजयंती
- १६. धनुर्मास आरंभ
- २५. वैकुंठएकादशी, गीताजयंती
- २५ से २९ तक तिरुपति श्री कपिलेश्वरस्वामी का प्लवोत्सव
- २६. श्रीस्वामिपुष्करिणी तीर्थमुक्कोटि
- २९. श्री दत्तजयंती

प्रभु प्राप्ति के लिये धनुर्मास

- श्री ज्योतीन्द्र अजवालिया
मोबाइल - ९८२५११३६३६

भारतीय संस्कृति में हर एक दिन का एक महत्व है, और हर मास का भी एक विशेष महत्व है। शास्त्र में हर एक मास का विविध महत्व बताया हैं। आज हम यहाँ एक ऐसे मास की बात करने जा रहे है जो धनुर्मास के नाम से प्रसिद्ध है। इस मास का व्रत करने से हमें प्रभु की प्राप्ति होती है।

हमे प्रभु को प्राप्त करने के लिये धनुर्मास का व्रत और धनुर्मास माहात्म्य का अनुसंधान करना चाहिये।

हमारा प्रश्न यह है की, धनुर्मास क्या है? धनुर्मास का महत्व क्या है? इस धनुर्मास में मांगलिक कार्य क्यों नही हो सकते? धनुर्मास मांगलिक कार्य के लिये अशुभ और प्रभु आराधना के लिये उत्तम ऐसा क्यों?

धनुर्मास मांगलिक कार्य के लिए अशुभ और प्रभु आराधना के लिए उत्तम ऐसा क्यों?-

१७ दिसंबर से १४ जनवरी का एक मास का समय धनुर्मास के नाम से जाना जाता है। धनुर्मास में मांगलिक कार्य वर्ज्य है। इस का मूल कारण ये है की इस समय में सूर्य धनु राशि में प्रवेश करता है। धनुराशि का अधिपति गुरु है और गुरु का अधिपति श्रीहरि विष्णु भगवान है। अर्थ ये हुआ की सूर्य और गुरु दोनों तेजस्वी ग्रह एक ही स्थान में है इसलिये तेजोदवेष की संभावना बनती है। इस घटना से गुरु का तेज कम हो जाता है जब गुरु निर्बल बनता है तब शास्त्र हमें, शुभ कार्य करने की अनुमति नहीं देता।

गुरु को सबल बनाने के लिए अधिपति देवश्री विष्णुभगवान की आराधना उत्तम मानी गयी है।

धनुर्मास में प्रभु आराधना उत्तम है इस के कई कारण है...

(१) सामान्यतः इस समय में मार्गशिर मास रहता है, श्रीमद्भगवद्गीता के विभूतियोग में भगवान श्रीकृष्ण कहते है की मासों में मार्गशिर मास मैं हूँ ''मासानां मार्गशीर्षोहं'' ॥३५॥

इसलिये मार्गशिर मास में धनुर्मास में अति से अति प्रभु नाम स्मरण और आराधना करना महिमान्वित है।

(२) धनुर्मास में सूर्य की गति दक्षिण की ओर रहती है। अर्थात् दक्षिणायन चलता है। दक्षिणायन का मतलब अंधकारमय समय है। इस अंधकार से बाहर निकल के तेजोमय गति के लिये हमें प्रभु श्रीहरि की आराधना करनी चाहिये।

(३) भगवान श्रीकृष्ण ने इसी समय में सांदीपनी ऋषी के आश्रम में मित्रों के साथ रहकर गुरु से विद्याभ्यास और धनुर्विद्या की शिक्षा प्राप्त की थी।

(४) भगवान स्वामीनारायणजी हरिभक्तों को प्रातःकाल में योगाभ्यास की शिक्षा प्रदान करते थे।

(५) महाभारत की रक्तकांति इस समय में हुई थी। इस समय अशुभ माना जाता है, अशुभ समय में ज्यादा प्रभु नाम स्मरण उत्तम है।

ऐसे कारण से धनुर्मास में श्री विष्णुभगवान की आराधना उत्तम है।

प्रभु प्राप्ति के लिए गोपिकाओं का व्रत -

श्रीकृष्ण अवतार में गोपिकाएँ भगवान श्रीकृष्ण को बहुत प्यार करती थी, भगवान श्रीकृष्ण को पति के रूप में पाने के लिए गोपीकाएँ कात्यायनी व्रत किया था।

कात्यायनि महाभागे महायोगिनि अधिश्वरी।
नंदगोप सूत देवि पति में कुरू में नमः।।

(भागवत खंड-२, अध्याय-२२)

अर्थात् : हे महाभाग्यशाली कात्यायनी, हे महायोगिनी, हे अधिश्वरी नंदगोपपुत्र श्रीकृष्ण को पति के रूप में पाने के लिये आपका आशिर्वाद प्रदान करे। इसी व्रत से प्रेरणा ले के, गोदादेवी ने धनुर्मास का व्रत किया और वैष्णवों को प्रभु प्राप्ति का सरल मार्ग बताया।

गोदाजी ने किया धनुर्मास-श्रीव्रत -

दक्षिणभारत क्षेत्र श्रीविल्लिपुत्तूर में श्री विष्णुचित्तजी की पुत्री (आंडाल) श्री गोदाजी ने प्रभु श्रीरंगनाथ को पति के रूप में पाने के लिये ''श्रीव्रत'' धनुर्मास का व्रत किया था। श्रीव्रत का पूरा वर्णन गोदाजी लिखित द्राविडग्रंथ तिरुप्पावै श्रीव्रत में है।

तिरुप्पावै श्रीव्रत के पाशुर-१ में गोदाजी प्रभु को पाने के लिये सभी सखियों को निमंत्रण दे के श्रीव्रत में शामिल करते है, पाशुर-२ में व्रत के सभी नियम व्रत के दौरान क्या करना, क्या नही करना ये बात बताते है। पाशुर-३ में व्रत करने से आस-पास के लोगों का क्या फल प्राप्त होगा यही बात बतायी है, पाशुर-४ में सभी सखियाँ फलदाता श्रीकृष्ण, श्रीहरि विष्णु भगवान को प्रार्थना करती है, पाशुर-५ में व्रत करने से हमें क्या फल चाहिये यही वर्णन है, पाशुर-६ से लेकर पाशुर-१५ तक विशेष सखी याने के, रामानुज संप्रदाय

के आल्वारों को निमंत्रण दे के इस व्रत में शामिल करते है, क्योंकि ये आल्वार प्रभु के प्यारे है, हर समय प्रभु आराधना में लीन रहते है, गोदाजी सोचते है की ये आल्वार की सिफारिश से हमें प्रभु जल्द ही प्राप्त हो सकता है, इसलिये आल्वार को इस व्रत में जोडते हैं, १६-वाँ पाशुर में एकत्र हुई सभी सखी प्रभु के महल के पास पहुँचते हुये द्वारपाल रूप श्रीरामानुजाचार्यजी को निवेदन करते है। १७वाँ पाशुर में गोदाजी और सखियाँ नंदजी, यशोदाजी, श्रीकृष्ण और बलरामजी को प्रार्थना करते है। १८ और १९ वाँ पाशुर में नीलादेवी को विशेष प्रार्थना करते हुए, नीलादेवी की सिफारिश से २०वाँ पाशुर में प्रभु के महल में पहुँचते हुए दंपति को प्रार्थना करते है, इस तरह श्रीव्रत से प्रभु की प्राप्ति हो जाती है और २१वाँ पाशुर में स्वामी श्रीभगवान श्रीकृष्ण को प्रार्थना करते है। पाशुर २२ में गोदाजी और सखियाँ भगवान श्रीकृष्ण के कृपा कटाक्ष पाने के लिये विनती करते है। २३ पाशुर में गतिदर्शन की इच्छा बताती है, प्रभु गति करके अपने महल में पधारते है। तब पाशुर-२४ में गोदाजी और सभी सखियाँ प्रभु का मंगलाशासन करते है। मंगलाशासन करने के बाद पशुर - २५, २६ में गोदाजी प्रभु की नित्य आराधना करने के लिये सेवा के साधन, परिकर की मांग करते है।

गोदाजी और सभी सखियों को प्रभु सेवा के साधन, साधनाएँ, मंगलदीप, छत्र, शंख प्रदान किया।

गोदाजी के सपनो में दिव्यदेश के सभी भगवान आये, इस में से रंगनाथ भगवान को पति के रूप में पसंद किया और २७ वें दिन गोदाजी का प्रभु रंगनाथ से मिलन हुआ। श्रीरंगनाथ भगवान की आज्ञा से गोदाजी को स्वारी में बिठाकर श्रीरंगम ले आये, विधि विधान से विवाह संपन्न हुआ। अंत में रंगनाथ भगवान की मूर्ति में समा गये। २८वाँ पाशुर में गोदाजी प्रभु से मिलके क्षमा की प्रार्थना करते है। २९वाँ पाशुर में गोदाजी प्रभु के साथ अपना अचल संबंध के लिये प्रार्थना करते है, और तिरुप्पावै श्रीव्रत की अंतिम गाथा अंतिम ३०वाँ पाशुर में श्रीव्रत का फल बताया है। इस तरह तिरुप्पावै श्रीव्रत मोक्ष प्रदान करनेवाला व्रत है।

श्री पराशर भट्टर स्वामीजी तिरुप्पावै पर प्रवचन करते समय उसका महत्व बतलाते हुये कहते है की हर एक वैष्णव को सुबह जल्दी उठकर तिरुप्पावै श्रीव्रत का अनुसंधान करना चाहिये, इतना न हो सके तो कम से कम २९, ३० पाशुर का अनुसंधान करना चाहिये, इतना भी न हो सके तो रोज ३० पाशुर का अनुसंधान करनेवाला भागवत श्रीवैष्णव का हमें स्मरण करना चाहिये। इस विधान से श्रीवैष्णव को पूर्ण तिरुप्पावै श्रीव्रत अनुसंधान का सम्मान प्राप्त होता है।

तिरुप्पावै श्रीव्रत की कवयित्री श्री गोदाजी साक्षात श्री महालक्ष्मी का अवतार है। इस गोदाजी ने, प्रभु को प्राप्त करने के लिये हमें ये श्रीव्रत की अनमोल भेंट श्रीवैष्णवों को प्रदान की है।

धनुर्मास - श्रीव्रत का सार

कलियुग में नाम कीर्तन का महिमा अपार है। धनुर्मास के समय में ज्यादा से ज्यादा प्रभुनाम कीर्तन, प्रभुनाम जप स्मरण करके, प्रभु का गुणगान कर, हर दिन श्रीविष्णुसहस्त्रनाम जप करके, श्रीव्रत का अनुष्ठान करके गोदाजी की तरह हम श्री प्रभु श्रीरंगनाथ भगवान की शरण प्राप्त कर लें।

जय श्रीमन्नारायण

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(पंचम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

९३

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि हे महात्माओ! भलीभाँति सत्संग किये हुए सद्गुरुओं के कृपा पात्र जो सच्चे मुमुक्षु लोग हैं वे लोग मान मर्यादा, विद्या, प्रतिष्ठा आदि को मुर्दे के शृङ्गार के समान मानते हैं। भगवान के साक्षात् दर्शन मिलन को ही अपना सच्चा स्वरूप मानते हैं। हे महानुभावो! है भी यथार्थ ही। जो अच्छे-अच्छे समझदार मुमुक्षु महात्मा हुए हैं उन सबों की ऐसी ही धारणा रही है और सब शास्त्रों का एक मुख से कहना भी यही है कि साक्षात् भगवान की प्राप्ति ही इस मनुष्य जन्म का प्रधान फल है। उस जन्म को, उस विद्या को, उस कुल जाति को, उस चतुरता को, उस व्रत अनुष्ठान को, उस संयम नियम को, उस पवित्रता को कोटि बार धिक्कार है कि जिसको पाकर प्यारे परमात्मा से साक्षात् मिलन जुलन नहीं हुआ। सारांश कहने का यह हुआ कि जिसका संसार चक्र के जन्म मरणादिक भयंकर दुःखों से जी घबड़ाया हुआ हो और इससे छुटकारा पाकर सदा के लिए दिव्य धाम में जाकर भगवत्सेवा का आनन्द लेना हो तो उन लोगों को चाहिए कि अहंकार रूप महाशत्रु से सदा दूर रहें। एक बात और भी सच्चे मुमुक्षुओं को सदा ध्यान में रखने की सख्त जरूरत है। वह यह है कि जिस प्रकार अहंकार जीवों को संसार चक्र में बारम्बार डालने वाला है उसी प्रकार एक दूसरा शत्रु ममकार भी है। इससे भी सच्चे मुमुक्षुओं को बहुत बचकर रहना चाहिए। जैसे अहंकार से बचने की बड़ी जरूरत है उसी प्रकार इस ममकार रूपी महाशत्रु से भी। ममकार का क्या मतलब है याने ममकार किसको कहते हैं इसका खुलासा अर्थ आपलोगों से आगे निवेदन करता हूँ सो ध्यान देकर श्रवण करिये। यह संसार और इसमें रहने वाली सभी वस्तुएँ परमात्मा की हैं। इन सबों का मालिक भगवान है। हम जीवों के प्रारब्धानुसार संयोग वियोग वही किया करते हैं। हम जितने जीव हैं काल कर्म गुण स्वभाव आदि के परवश हैं। स्वतंत्र एक परमात्मा ही हैं। वास्तव में हमलोगों का यहाँ कोई भी नहीं है। उन्हीं के देने से शरीर मिला है। उन्हीं के देने से माता पिता मिले हैं। उन्हीं ने पृथ्वी बनाकर हमलोगों के लिए महल, मकान इत्यादि दिया। वही परमात्मा हम चेतनों के प्रारब्धानुसार स्त्री, पुत्र, मित्र, भाई, बन्धु, कुटुम्ब आदि का संयोग लगाते हैं। वही भगवान सब चेतनों के प्रारब्धानुसार सबको न्यारे-न्यारे आयुष्य दे रखे हैं। सच्चे विचार से सोचा जाय तो इन सभी चीजों के ऊपर हम किसी जीवों की स्वाधीनता नहीं है। प्रधानता से यथार्थ में न किसी में पुत्र पैदा करने का स्वातन्त्र्य है न अपनी इच्छानुसार उस में उम्र डालने की शक्ति है, न अपनी मन मुताबिक अपनी स्त्री को जिंदा रखने की स्वाधीनता है। सारांश कहने का यह हुआ कि यह शरीर अथवा इस शरीर के जितने सम्बन्धी हैं ये सब परमात्मा के हाथ में हैं और उन्हीं के हैं और इन सबों का संयोग और वियोग इन चेतनों के प्रारब्धानुसार समय-समय पर वही कराया करते हैं। हम लोग यदि चाहें कि सौ वर्ष जीयें, हमारा लड़का सौ वर्ष जीता रहे, हमारी स्त्री सदा हमारे साथ रहे, हम सदा धनवान होकर रहें, यह सभी मनोरथ हम लोगों का फिजूल है। जब कि हम लोगों की इच्छा से यह सृष्टि ही नहीं हुई है फिर इच्छानुसार सबों का संयोग कैसे रह सकता है। हम लोग यदि चाहें कि अमुक मनुष्य जल्दी मर जाय, यह भी विचार से बाहर की बात है। संयोग वियोग के प्रसंग में हम जितने जीव हैं बिल्कुल पराधीन हैं। किससे किस को कितने दिन का संयोग, किस

दिन किस से किस का वियोग होगा; ये सब बातें सिवाय परमात्मा के और कोई भी न तो जानता है और न जान सकेगा। जिन चेतनों के ऊपर, जिस प्रकार सुख-दुःख भोगने का, संयोग वियोग होने का उनके प्रारब्धानुसार परमात्मा ने संकल्प कर लिया है वही होगा। उसके अलावा तिल भर भी इधर उधर नहीं हो सकता है। इससे सभी चीजें परमात्मा की हैं हम लोगों की नहीं। सबों का संयोग वियोग परमात्मा ही के हाथ में है हम लोगों के आधीन नहीं। हम तथा हमारे सम्बन्धी कहाने वाले वास्तव में सब श्रीरामजी के ही हैं। जितने दिन वह चाहेंगे उतने दिन तक संयोग रखेंगे। जब चाहेंगे वियोग रखेंगे। इससे हम सच्चे मुमुक्षुओं को यह सदा विचार कर रहना चाहिये कि इन सबों में ममकार की बृद्धि न होने पावे अर्थात् बहुत सत्संग किये हुए जो मुमुक्षु महात्मा लोग हैं वे संसार में इस तरह रहते हैं। यह धन, यह कुटुम्ब, यह स्त्री, यह पुत्र, यह शरीर, यह मठ, यह महल, मकान, मन्दिर यह सब मेरा नहीं है परमात्मा का है। हमारे प्रारब्धानुसार परमात्मा की तरफ से सारा सामान का जुटान भया है। जब वह चाहेंगे तब इनका वियोग हो जावेगा। इन सबों में से हृदय से अपनापन त्याग कर रहा करो। जैसे किसी के पास कोई अपनी अमानत वस्तु रख कर जाते वक्त यह कह जाता है कि ''यह हमारी चीज आप रखे रहिये, इससे अपना काम भी लेते रहिए परन्तु जिस वक्त मैं चाहूँगा उसी वक्त अपनी चीज ले लूँगा। इसमें आप अपनेपन का व्यामोह न रखियेगा''। इतना कह कर अमानत धरके चला जाता है और किसी वक्त आकर अपनी अमानत वस्तु ले लेना चाहता है तो समझदार इमानदार लोग न देने में इतराज करते हैं, न उसके लेकर चले जाने पर किसी प्रकार की उदासी मुख पर लाते हैं, न चीज अपने यहाँ से चले जाने पर उसके लिए किसी प्रकार का शोक मोह ही करते हैं। इसी तरह यह स्त्री, पुत्र, मित्र, ऐश्वर्य, कुटुम्ब आदि वस्तु परमात्मा ने तुम्हारे पास अपनी अमानत छोड़ रखी है। जिस जिसकी उन्हें जरूरत होगी उसको क्रमशः लेते जायेंगे याने वियोग कराते जायेंगे। इसमें तुम्हारा कुछ वश न चलेगा। इसलिए परमात्मा की अमानत जो यह पूर्वोक्त चीजें हैं उन पर से पहले ही से ममता को त्याग कर याने अपनत्व को छोड़ कर रहा करो। ऐसा यदि न करोगे और दूसरों की अमानत चीज पर अपनी अज्ञानता वश अपनत्व करके रहोगे मेरी स्त्री, मैं स्त्री वाला हूँ, अच्छा काम सम्भालने वाला मेरा सुपात्र लड़का है, अब इसके भरोसे मैं निश्चिन्त होकर रहूँगा। हमारे कुटुम्बी अच्छे हैं, इनके द्वारा हमको खूब सहायता मिलेगी। बहुत मेरे पास सम्पत्ति है, कैसा भी खर्च करूँगा तो भी सैकड़ों वर्ष निकल जायेंगे। इस प्रकार अपनी अज्ञानतावश पराई चीजों के ऊपर आशा बाँध कर रहोगे तो परवश वियोग हो जाने पर भयंकर शोक मोह का सामना करना पड़ेगा। गई हुई चीज तो हाथ न आयगी परन्तु पराधीन चीजों के ऊपर ममता करने का यह बुरा फल होगा कि देव दुर्लभ इस मनुष्य देह को शोक, मोह में पड़कर व्यर्थ नष्ट हो जाना पड़ेगा। पराधीन गई हुई चीज तो मिल न सकेगी और शोक मोह में पड़ कर शरीर चिन्ता उद्वेग होने के कारण अत्यन्त कमजोर हो जायगा जिससे भगवद्भजन होना मुश्किल होगा। शोक मोह के कारण जब कलेजा कुचल जावेगा तो भगवान का भजन सेवा पूजा ध्यान वगैरह से भी रुचि हट जायेगी, इससे परलोक भी बिगड़ जायगा और जो चला गया सो तो मिलेगा नहीं। बस दूसरे की अमानत चीज पर ममकार करने का ऐसा भयंकर फल तुम्हें भोगना पड़ेगा, इसलिये तुम्हें बारम्बार समझाता हूँ कि यह स्त्री पुत्रादिक तुम्हारे कोई नहीं हैं; यह सब परमात्मा की अमानत है।

(क्रमशः)

युवता

भगवद्गीता और नौजवान

नायक के गुण

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास

हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास

मोबाइल - ९८२१९१४६४२

प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी संदर्भ में नायक होता है। कोई अपने परिवार का नायक होता है, कोई अपने वंश का नायक होता है, कोई स्वयं से जुड़े हुए समाज का नायक होता है, कोई एक जिले का नायक होता है, कोई एक राज्य का नायक होता है, कोई देश का नायक होता है, तो कोई संपूर्ण जगत का नायक होता है। लेकिन इन सभी नायकों के कुछ सकारात्मक गुण एक समान होते हैं। जन्म से कोई भी नायक नहीं होता है। लेकिन इसके लिए योग्य व्यक्ति में कुछ विशेष गुण प्रारम्भ से ही दिखाई देते हैं। हर एसे व्यक्ति का एक अटल लक्ष्य होता है। लक्ष्य पर केन्द्रित रहते हुए एक नायक सदैव निर्धारित दिशा की ओर अग्रसर होता है और अन्त में लंबे समय से वाँछित अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

भगवद्गीता के १२वें अध्याय में एक नायक के गुणों का वर्णन किया गया है। उनमें से कुछ यहाँ प्रस्तुत हैं। ईर्ष्या रहित होना एक नायक का सर्व प्रथम गुण है। नायक अनेकों लोगों का नेतृत्व करता है या अनेकों लोगों के साथ कार्य करता है। वह ईर्ष्या रहित होने पर ही एसे कार्यों को दक्षतापूर्वक कर सकता है। इससे बढ़कर किसी से ईर्ष्या न करने वाला व्यक्ति सभी को प्रिय होता है। लोग एसे व्यक्ति का अत्यंत सम्मान एवं उसकी प्रशंसा करते हैं। मित्र-भाव नायक का दूसरा महत्वपूर्ण गुण है। यदि किसी से ईर्ष्या न करना नायक का एक गुण है तो सर्वत्र सभी को मित्र बना लेना उसका दूसरा अत्यंत महत्वपूर्ण गुण है। दया करना उसका अगला महान गुण है। नायक इन सभी गुणों का प्रदर्शन विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न व्यक्तियों के साथ करता है। नायक एक प्रतिव्दंव्दी से भी ईर्ष्या नहीं करता है। वह सोचता है कि एक प्रतिव्दंव्दी में भी अनुसरण करने योग्य कुछ अच्छे गुण होते हैं।

नायक स्वयं के तुल्य सभी व्यक्तियों के साथ मित्रता पूर्ण व्यवहार करता है। इस जगत में किसी कार्य को करने के लिए अनेकों व्यक्तियों की सहायता लेनी पड़ती है। केवल मित्रता के द्वारा ही अन्यों से सहायता प्राप्त हो सकती है। फिर अपने से नीचे वाले व्यक्तियों के प्रति दया के अच्छे गुण का प्रयोग करना चाहिए। नायक अपने से नीचे वालों की कभी उपेक्षा नहीं करता है। यही नही वह अपने अधीन व्यक्तियों को ऊपर उठने के सभी अवसर एवं सुविधाएँ भी प्रदान करता है। छत्रपत शिवाजी ने १८ वर्ष की आयु से युद्धों को लड़ना प्रारम्भ किया और ५० वर्ष की आयु तक ४०० किलों को जीत लिया था। उनमें से कुछ किले उन्होने बनवाये थे और कुछ जीते थे। वे किले पर विजय पाने के लिए योग्य व्यक्ति को भेजते थे और जीतने के पश्चात उसी को किले का प्रभारी बना देते थे। एक नायक का यह उचित उदाहरण है। नायक अपने आधीन व्यक्तियों के प्रति असाधारण दया दिखाते हुए उनके जीवन को श्रेष्ठ बनाने के सभी अवसर प्रदान करता है।

''जो व्यक्ति किसी से द्वेष नहीं करता, सभी जीवों का दयालु मित्र है, स्वयं को स्वामी नहीं मानता है, मिथ्या अहंकार से मुक्त है और सहिष्णु होकर सुख-दुःख में समभाव रहता है वह मुझे अत्यंत प्रिय है।'' यह गीता में दिया भगवान का संदेश है। उपर्युक्त तीन गुणों के अतिरिक्त एक नायक को स्वामित्व की सोच के बिना मिथ्या अहंकार से दूर रहते हुए सुख एवं दुःख दोनो ही स्थितियों में समभाव रहना चाहिए। स्वामित्व की झूठी भावना से ग्रसित व्यक्ति उचित न्याय करने में असमर्थ होता है। वह सदैव कंजूसी करता है। मिथ्या अहंकार रखने वाले व्यक्ति से सभी लोग दूर रहना चाहते हैं। सुखों एवं दुःखों में समदर्शी रहना नामक का एक अन्य महत्वपूर्ण गुण है। सफलता का श्रेय अपने आधीन व्यक्तियों को देने एवं असफलता का उत्तरदायित्व स्वयं लेने से ही सच्चे नायक की पहचान होती है। युवाओं को प्रारम्भ से ही नायक के गुणों को पाने का अभ्यास करना चाहिए। अभ्यास के द्वारा किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए युवाओं को नायक होने का लक्ष्य बनाकर लगातार नायक के गुणों को पाने का अभ्यास करना चाहिए।

यदि ध्यानपूर्वक देखा जाये तो नायक के यह सभी गुण मन से ही सम्बन्धित हैं। अतः नायक को अपने सभी लक्ष्यों में सफल होने के लिए मन को पूर्णतया संयमित करना आवश्यक है। मन को संयमित करने में सफल नायक संपूर्ण जगत में प्रतिष्ठित हो जाता है। अर्थात सभी लोग उसकी प्रशंसा करते हैं। सामान्यतया लोग एसे नायक की खोज में रहते हैं जो उनका नेतृत्व कर सके। अतः यदि तुम उचित गुणों को प्रदर्शित करते हुए नायक बनने का निश्चय करो तो संपूर्ण जगत तुम्हे नायक के रूप में आमंत्रित करेगा। भगवद्गीता से समृद्धि एवं आनंदपूर्ण जीवन दिलाने वाले नेतृत्व के लिए आवश्यक एक नायक के गुणों की जानकारी प्राप्त होती है।

देवुनिकडपा, श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वरस्वामी मंदिर

ब्रह्मोत्सव

(दि. **25-01-2020,** ***शनिवार से दि.*** **04-02-2020,** ***मंगलवार तक)***

दिनांक	वार	दिन	रात
25-01-2020	शनि	दीक्षा तिरुमंजन	सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण
26-01-2020	रवि	तिरुच्चि, ध्वजारोहण	चंद्रप्रभावाहन
27-01-2020	सोम	सूर्यप्रभावाहन	महाशेषवाहन
28-01-2020	मंगल	लघुशेषवाहन	सिंहवाहन
29-01-2020	बुध	कल्पवृक्षवाहन	हनुमन्तवाहन
30-01-2020	गुरु	मोतीवितानवाहन	गरुडवाहन
31-01-2020	शुक्र	कल्याणोत्सव	गजवाहन
01-02-2020	शनि	रथ-यात्रा	धूळि उत्सव
02-02-2020	रवि	सर्वभूपालवाहन	अश्ववाहन
03-02-2020	सोम	वसंतोत्सव, चक्रस्नान	ध्वजावरोहण, हंसवाहन
04-02-2020	मंगल	---	पुष्पयाग

- कार्यनिर्वहणाधिकारी।

(गतांक से)

श्री कलिवैरिदास स्वामीजी

(श्री नम्पिळळै)

- श्रीमती शालिनी डी.बुबना
मोबाइल - ९८३११२१२८९

नम्पिळळै के समीप एक घर में एक श्रीवैष्णव स्त्री रहती थी। एक दिन श्रीवैष्णव उस औरत के पास जाकर उनसे विनती करते हैं कि अगर वे उनका घर नम्पिळळै के घर से मिला दें तब उनका घर बड़ा हो जायेगा और बहुत अधिक श्रीवैष्णवों के लिए आश्रय होगा। पहले उनकी विनती को अस्वीकार कर देती हैं लेकिन बाद में नम्पिळळै के पास जाकर उनसे विनती करते हैं कि उनके घर के बदले में उन्हें परमपद में स्थान अनुग्रह करें। नम्पिळळै एक पत्र लिख कर उसके हाथ में देते हैं। उस पत्र को लेकर थोड़े दिन के बाद अपना चरम शरीर छोड़कर औरत परमपद प्राप्त कर लेती हैं।

नम्पिळळै की दो पत्नियाँ थी। एक बार उनकी पहली पत्नी से अपने बारे में उनका विचार पूछते हैं। उत्तर देती हैं कि उन्हें स्वयं एम्पेरुमान् का स्वरूप मानती हैं और उन्हें अपने आचार्य के स्थान में देखती हैं। उनके उत्तर से नम्पिळळै बहुत प्रसन्न हो जाते हैं और उनसे मिलने तिरुमालिगै को आने वाले श्रीवैष्णवों के तदियाराधन कैंकर्य में पूरी तरह से झुट जाने के लिए कहते हैं। उनकी दूसरी पत्नी से अपने बारे में उनका विचार पूछते हैं। वे उत्तर देती हैं कि नम्पिळळै उनके प्रिय पति हैं। नम्पिळळै उनसे पहले पत्नी की सहायता करके श्रीवैष्णव का प्रसाद पाने के लिए कहते हैं। वे कहते हैं श्रीवैष्णवों का शेष प्रसाद पाने से उनका शुद्धीकरण होगा और उनके लौकिक विचार (पति-पत्नी) आध्यात्मिक (आचार्य-शिष्य) विचारों में बदलेंगे।

जब महा भाष्य भट्टर उनसे पूछते हैं कि जब अपनी निज स्वरूप (चैतन्य) एहसास होने के बाद श्रीवैष्णव की सोच कैसी होनी चाहिए। नम्पिळळै उत्तर देते हैं कि ऐसे श्रीवैष्णव नित्य एम्पेरुमान् को ही उपाय और उपेय मानना चाहिए, स्मरणातीत काल से संसार के इस बिमारी के चिकित्सक आचार्य के प्रति कृतज्ञता से रहना चाहिए, एम्पेरुमानार के श्रीभाष्य द्वारा स्थापित सिद्धान्तों को सत्य मानना चाहिये, श्री रामायण के द्वारा भगवद् गुणानुभव करना चाहिए, अपना सारा समय आळवारों के अरुळिचेयल में बिताना चाहिए। अंत में कहते हैं कि यह दृढ़ विश्वास होना चाहिये की इस जीवन के अंत में परमपद की प्राप्ति निश्चित हैं।

कुछ श्रीवैष्णव पाण्ड्यदेश से नम्पिळळै के पास आकर पूछते हैं की अपने साम्प्रदाय का मूल तत्त्व क्या हैं। नम्पिळळै उनसे समुद्र तट के बारे में सोचने के लिए कहते हैं। चकित होकर पूछते हैं कि समुद्र तट के बारे में क्या सोचने के लिए हैं। नम्पिळळै समझाते हैं कि चक्रवर्ति राजा श्रीराम रावण से युद्ध करने के पहले समुद्र तट पर शिविर में विश्रान्त ले रहे थे और वानर सेना उनकी रक्षा के लिए उस इलाके कि चौकीदारी कर रहे थे। थकान के कारण वानर सेना सो जाती हैं और एम्पेरुमान् उनकी रक्षा करने उस इलाके कि चौकीदारी

करने में झुट जाते हैं। नम्पिळळै समझाते हैं कि एम्पेरुमान् हमारे विश्राम के समय भी रक्षा करते हैं और इसलिए उन पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि वे हमारी रक्षा करेंगे। यथा हमें स्व रक्षणे स्वान्वयम् (खुद अपने आप कि रक्षा करने कि मनो दृष्टि) को छोड़ देना चाहिए।

अन्य देवी देवताओं के भजन के बारे में नम्पिळळै ने अद्भुत रूप से विवरण दिया हैं। एक बार उनसे प्रश्न किया जाता हैं कि नित्य कर्म करते समय आप अन्य देवता (जैसे इंद्र, वायु, अग्नि) कि पूजा कर रहे हैं लेकिन यह पूजा उनके मंदिर को जाकर क्यों नहीं कर रहे हैं? तत्क्षण अति चतुर जवाब देते हैं कि क्यों आप यज्ञ के अग्नि को नमस्कार करते हैं और वहीं अग्नि जब स्मशान में हैं तब उससे दूर हैं? इसी तरह शास्त्र में निर्बन्ध किया गया हैं कि नित्य कर्म को भगवद् आराधन मानकर करना चाहिए। यह कर्म करते समय हम सभी देवताओं के अंतरात्मा स्वरूप एम्पेरुमान् को दर्शन करते हैं। वही शास्त्र बतलाता हैं कि हमें एम्पेरुमान् के अलावा किसी अन्य देवता कि पूजा नहीं करनी चाहिए इसीलिए हम दूसरे देवताओं के मंदिर को नहीं जाते हैं। साथ ही साथ जब यह देवताओं को मंदिर में प्रतिष्ठा की जाती हैं तब उन में रजो गुण भर जाता हैं और अपने आप को परमात्मा मानने लगते हैं और क्योंकि श्रीवैष्णव सत्व गुण से सम्पन्न हैं और वे रजो गुण सम्पन्न देवता को पूजा नहीं करते हैं। अन्य देवता का भजन या पूजा न करने के लिए क्या इससे बेहतर विवरण दिया जा सकता हैं।

एक श्रीवैष्णव उनसे मिलने आते हैं और बताते हैं कि वे पहले से भी बहुत दुबले हो गए हैं। नम्पिळळै उत्तर देते है कि जब आत्मा उज्जीवन कि दिशा में बढ़ती हैं जब अपने आप शरीर घट जाता हैं।

दूसरी बार एक श्रीवैष्णव उन्हें देखकर कहते हैं कि वे बलवान नहीं लग रहे हैं तब नम्पिळळै कहते हैं उनके पास एम्पेरुमान् कि सेवा करने के लिए शक्ति हैं जो खाफी हैं और बलवान होकर उन्हें कोई युद्ध लड़ने नहीं जाना हैं। इससे यह निरूपण होता हैं कि श्रीवैष्णव को शारीरिक रूप से मजबूत बनाने कि चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

जब नम्पिळळै अस्वस्थ हो जाते हैं तब एक श्रीवैष्णव बहुत चिंतित हो जाते हैं। उन्हें देखकर नम्पिळळै बताते हैं कि किसी भी तरह कि कष्ट भुगतनेलायक हैं क्योंकि शास्त्र में बताया गया हैं कि एम्पेरुमान् के चरण कमलों में आत्मा समर्पण किये महान जन मृत्यु देवता को खुशी-खुशी आमन्त्रित करते हैं।

नम्पिळळै के शिष्य कई आचार्य पुरुष के परिवारों से थे और श्रीरंगम् में सब उनके समय को नल्लड़िकाल् (सबसे अच्छा समय) करके स्तुति करते हैं। इनके शिष्य नाडुविळ तिरुवीधि पिळळै भट्टर् (१२५०० पड़ि) और वडक्कु तिरुवीधि पिळळै (ईडु ३६००० पड़ि) दोनों ने तिरुवायमोळि का व्याख्यान किया था। लेकिन नम्पिळळै ने पहला ग्रन्थ बहुत ही विस्तरणीय होने के कारण उसे नकार दिया और दूसरा व्याख्यान को स्वीकृत करके ईयुण्णि माधव पेरुमाळ को दे दिया ताकि भविष्य काल में उसके निगूढ़ अर्थ अळगीय मणवाळ मामुनि के द्वारा सभी जान सकें। उन्होंने पेरियवाच्छान् पिळळै को भी आदेश दिया कि तिरुवायमोळि का व्याख्यान लिखे और आचार्य के आदेश अनुसार उनकी इच्छा पूर्ति करते हुए उन्होंने २४००० पड़ि व्याख्यान लिखें और नम्पिळळै ने उस ग्रन्थ को बहुत प्रशंसा कि।

नम्पिळळै पेरिय कोविल वळळलार् से ''कुलं तरुं'' का अर्थ पूछते हैं तब वळळलार् कहते हैं कि ''जब मेरा कुल जन्म कुल से नम्बूर् कुल (नम्पिळळै का कुल) में

बदल गया हैं तो उसे कुलं तरुं कहते हैं।'' यह विषय ठीक पेरियाळवार् श्रीसूक्ति पंडै कुल (जन्म कुल) से तोंडा कुल (आचार्य सम्बन्ध और कैंकर्य प्राप्त होता हैं)। नम्पिळळै इतने महान थे।

तमिल और संस्कृत के साहित्य पे इनके अपार ज्ञान के कारण व्याख्यान करते समय श्रोतागण को सम्मोहित करते थे। इन्हीं के बल तिरुवायमोळि को नई ऊँचाईयाँ प्राप्त हुई हैं और अरुळिचेयळ के अर्थ सभी को समझ आने लगे। तिरुवायमोळि के ६००० पडि व्याख्यान के अलावा अन्य ४ व्याख्यान में इनका कोई न कोई रिश्ता था।

९००० पड़ि मूल ग्रन्थ नंजीयर् से रचित था लेकिन नम्पिळळै ने सूक्ष्म दृष्टि और नए अर्थ विशेषों के साथ फिर से लिखा हैं।

२४००० पड़ि पेरियवाच्छान् पिळळै ने नम्पिळळै के आदेश और उपदेश अनुसार रचना किया हैं।

३६००० पड़ि वडक्कु तिरुवीधिपिळळै ने नम्पिळळै के व्याख्यान को सुनकर रचना किया हैं।

१२००० पड़ि पेरियवाच्छान् पिळळै के शिष्य वादि केसरि अळगीय मणवाळ जीयर् ने लिखा हैं और अर्थ विशेष पे गौर करने से कह सकते हैं कि यह ग्रन्थ नम्पिळळै के ३६००० पड़ि को अनुगमन करता हैं।

यही नहीं नम्पिळळै ने अपनी अपार कारुण्य के साथ संप्रदाय के दो कीर्तिमान स्तम्बों की स्थापना की हैं- पिळळै लोकाचार्य और अलगीय मणवाल पेरुमाळ नायनार् जिन्होंने पूर्वाचार्य से प्रसादित ज्ञान से क्रमानुसार श्री वचन भूषण और आचार्य हृदय को प्रदान किया हैं।

नम्पिळळै अपने चरम तिरुमेनि को श्रीरंगम् में छोड़कर परमपद प्रस्थान हुए। उस अवसर पर नाडुविळ तिरुवीधि पिळळै भट्टर् अपने पूरे सिर के केश मुण्डन करवाते हैं। (शिष्य गण और पुत्र केश मुण्डन करते हैं जब पिता या आचार्य परमपद प्रस्थान होते हैं) और जब उनके भाई नंपेरुमाळ से शिकायत करते हैं कि कूर कुल में पैदा होने के बावजूद उन्होंने ऐसा बर्ताव किया तब नम्पेरुमाळ भट्टर को उनके सामने उपस्थिति का आदेश देते हैं और भट्टर विवरण से कहते हैं कि उनके कुटुम्ब सम्बन्ध से भी नम्पिळळै से उनके सम्बन्ध को वे अधिक महत्व देते हैं। यह सुनकर नंपेरुमाळ बहुत खुश हो जाते हैं।

श्री कलिवैरिदास स्वामीजी तनियन

वेदांति मुनि पादाब्ज श्रितं सूक्ति महार्णवम्।
वृश्चिके कृत्तिका जातं कलिवैरिगुरुं भजे।।

वेदान्त वेध्यामृत वारिराशेर्वेदार्थसारामृत पूर मग्यम्।
आदाय वर्षन्तमहं प्रपध्ये कारुण्य पूर्ण कलिवैरिदासम्।।

(समाप्त)

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

गोदाता को सूचना

१) तिरुपति में स्थित ति.ति.देवस्थान के संबंधित श्री वेंकटेश्वर गो संरक्षण शाला में देशवाली गाय मात्र ही को पूर्वानुमति से स्वीकारते हैं।

२) स्वस्थ और ठीक रहने वाली देशवाली गो जाति मात्र ही को स्वीकारते हैं।

गोसंरक्षणाधिकारी,
ति.ति.दे., तिरुपति।

(गतांक से)

श्री प्रपन्नामृतम्

(८वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - ९९००९२६७७३

''कप्यासः'' श्रुति द्वारा भगवन्नेत्रों की उपमा कमलदल से दी गई है –

श्रीरामानुजाचार्य पहले की ही भाँति यादवप्रकाशाचार्य के यहाँ अध्ययन करते हुए एक दिन यादवप्रकाश को तेल लगाते समय श्रुतियों का अर्थ श्रवण कर रहे थे। प्रसंग प्राप्त ''कप्यास'' श्रुति का अर्थ करते हुए यादवप्रकाशाचार्य बोले- ''भगवान के नेत्र बन्दर के पायुभाग की तरह लाल हैं।'' इस सिद्धान्तविरुद्ध अर्थ को सुनकर श्रीरामानुजाचार्य की आँखों से अश्रुधारा बह निकली। रामानुजाचार्य का आँसू से भरा मुखमण्डल देखकर यादवप्रकाशाचार्य ने दुःख का कारण पूछा।

यादवप्रकाशाचार्य को उत्तर देते हुए रामानुजाचार्य बोले - ''आपने ''कप्यास'' श्रुति का वेदान्त सिद्धान्त विरुद्ध अर्थ किया है, इसी से मुझे दुःख है।''

श्रीरामानुजाचार्य के उत्तर से असन्तुष्ट एवं क्रुद्ध यादवप्रकाश बोले- ''दुष्ट! तुम्हीं इस श्रुति का युक्तियुक्त (वेदान्त सिद्धान्त सिद्धान्तित) अर्थ मेरे सामने करो।'' यादवप्रकाश के प्रत्युत्तर में श्रीरामानुजाचार्य ने निम्न श्लोक का पाठ किया-

गम्भीराम्भसि जातस्य प्रोद्यद्भानुकरैस्तदा।
सम्फुल्लदलपद्मस्य सदृशे लोचने हरेः।।

अर्थात् गहरे जल में उत्पन्न उगते हुए सूर्य की किरणों से नव विकसित कमलदल की तरह ही भगवान के नेत्र युगल हैं इस श्रुति का यही अर्थ है।

भला जिस वेदान्त में भगवान को षड्गुण सम्पन्न बतलाया गया है, उस वेदान्त में भगवान के उत्तमोत्तम नेत्रों की तुलना बन्दर के पायुभाग (नितम्ब) से कैसे की जा सकती है? श्रुति का शब्दार्थ भी आप देखें- (कम्) जलम् पिबति इति कपिः सूर्य इत्यर्थः। तेन (आस्यते) क्षिप्यते इति कप्यासम् कमलम् इत्यर्थः। अतः हिरण्य पुरुष के नेत्रों की उपमा कमलपद से ही दी जा सकती है।

रामानुजाचार्य के इस अर्थ से असन्तुष्ट एवं क्रुद्ध यादवप्रकाशाचार्य बोले - ''दुष्ट! मेरे अर्थ को असंगत सिद्ध करके तुम यहाँ नहीं रह सकते। अतः मेरे यहाँ से चले जाओ।''

दुष्ट यादवप्रकाशाचार्य के यहाँ से आकर श्रीरामानुजाचार्य ने श्रीकांचीपूर्ण स्वामीजी को सारा वृत्तान्त सुना डाला और उन्हीं की आज्ञा से स्वर्ण-कमल द्वारा भगवान वरदराज की जल-सेवा पुनः प्रारम्भ करते हुए हस्तिगिरि पर निवास करने लगे।

।। श्रीप्रपन्नामृत का ८वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

भागवत कथा सागर

अजामिल का उद्धार

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवांघ्रि सेवक दास

हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास

मोबाइल - ९८२१९१४६४२

एक बार कन्याकुब्ज में अजामिल नामक एक ब्राह्मण था। वह वेदों का अध्ययन करने वाला एक सज्जन एवं अच्छे आचरण का व्यक्ति था। वह प्रजल्प रहित एवं ईर्ष्या से मुक्त था। एक बार अपने पिता के आदेश से वह वेदिक संस्कारों के लिए फल, फूल एवं विशेष घास लेने वन गया था। वह कार्य पूर्ण करके घर आते समय उसने वेश्या को आलिंगन करते हुए एक विलासी व्यक्ति को देखा। अपने पतन की कहानी स्वयं रचने के लिए वह उस दृश्य को बार-बार देखने का बहुत इच्छुक था। उसके अन्दर काम का सागर उमड़ा और हृदय में वह वेश्या समा गई। वेश्या के बारे में लगातार सोचते हुए एक दिन ब्राह्मण उस औरत को स्थायी रूप से घर ले आया। इस प्रकार अभद्र दृश्य को जीवन में बस एक बार देखने से अजामिल का समाज में एक सम्मानित स्थान से पतन हो गया।

वेश्या अपने नवपरिचित के प्रति बहुत प्रेम दिखाने लगी और अजामिल को उससे बहुत लगाव हो गया। वेश्या को संतुष्ट करने के लिये उसने धीरे-धीरे अपना संपूर्ण धन उस पर खर्च कर दिया। अन्त में वेश्या के प्रेम से भ्रमित होकर उसने अपनी पत्नी को सदा के लिये छोड़ दिया। यहाँ तक कि वेश्या को पसंद न होने के कारण अजामिल ने पूजा-पाठ के नित्य कार्यों को करना

भी बन्द कर दिया। वह वेश्या के द्वारा पकाया भोजन करने लगा और पूरे दिन कोई भी उचित कार्य नहीं करता था। उसने केवल पूजा-पाठ के कार्यों को ही नहीं छोड़ा, उसके अतिरिक्त अवैध कार्य भी करने लगा। वह जुआ खेलने, जुआ में धोका देने एवं निर्दोष व्यक्तियों को ठगने जैसे बीभत्स कार्य भी करने लगा। उस अवैध धन से वह वेश्या के साथ परिवार का निर्वाह करने लगा। इस प्रकार समय बीतता गया और वह ८० वर्ष का हो गया। वृद्धावस्था में भी उसकी काम की इच्छा शाँत न हुई और उसका एक पुत्र पैदा हुआ। सौभाग्य से उसने पुत्र का नाम ''नारायण'' रखा और उसे बार-बार नाम लेकर पुकारना प्रारम्भ किया। सबसे छोटे पुत्र से अत्यधिक प्रेम होने के कारण वह उसे बहुत लाड़-प्यार

करता था। ''नारायण! यहाँ आओ और यह मिठाई खा लो'', ''नारायण! पानी पी लो'', ''नारायण! मेरे पास आओ'' इत्यादि अजामिल बार बार कहता रहता था।

लेकिन समय और ज्वार किसी की प्रतीक्षा नहीं करते हैं। अजामिल का अंतिम दिन आते ही तीन डरावने एवं भयानक दिखाई देने वाले व्यक्ति अजामिल के प्राण लेने आये। उनके चेहरे बहुत काले एवं बद्सूरत थे। वे अत्यंत क्रोधित थे। अजामिल द्वारा मन, वाणी एवं कर्मों से किये गये पापों के कारण यमराज के वे तीन प्रतिनिधि दूत वहाँ प्रकट हुए। अजामिल उनके भयानक रूपों को देखकर घबरा गया और उनसे अपने सबसे छोटे पुत्र के भयातुर होने की चिन्ता करने लगा। पुत्र में विश्वास जगाने के लिए वह ''नारायण, नारायण'' कहने लगा। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि वहाँ चार सुगठित शरीर वाले सुसज्जित व्यक्ति प्रकट हुए और उन्होंने यमदूतों के कार्य में हस्तक्षेप किया। वे गरजते हुए बोले ''ठहरो, ठहरो'' और यमदूतों को सचमुच पीछे हटा दिया। यमराज के सेवक उस अप्रत्याशित घटना को देखकर आश्चर्यचकित हो गये और पूँछने लगे ''हमें अपने कर्तव्य का पालन करने से रोकने वाले आप कौन हैं? क्या आप को ज्ञात नहीं है कि यमराज के आदेशों के पालन को रोकना अपराध है? आप हमें अपना कर्तव्य निभाने से क्यों रोक रहे हैं? क्या आप स्वर्गलोक के देवता हैं या कि सर्वश्रेष्ठ भक्तों में से हैं?'' यमदूतों के भोले वचनों को सुनकर उन चार दिव्य व्यक्तियों, जो कोई अन्य नहीं अपितु भगवान विष्णु के ही दूत थे, के मन में सुबुद्धि पूर्ण विचार आया। उन्होने तुरन्त पूछा ''यदि आप सच में यमराज के सेवक हैं तो कृपया हमें विस्तार में बतायें कि सच्चा धर्म क्या है? दण्ड की वास्तविक प्रकिया क्या है? कौन वास्तव में दण्डनीय है। क्या आप सोचते हैं कि कर्मबन्धनों के अन्तर्गत कार्य करने वाले सभी व्यक्ति दण्डनीय हैं या उनमें से केवल कुछ को ही दण्ड देना चाहिए? कृपया हमें यह सब विस्तार में बतायें।''

विष्णुदूतों के प्रश्नों ने यमदूतों को गूँगा बना दिया। कुछ देर बाद साहस जुटा कर उन्होने बोलना प्रारम्भ किया ''श्रीमान! जो वेदों के अनुसार है वह धर्म है और जो वेदों के विपरीत है वह अधर्म है। वेद भगवान विष्णु से निर्गत होकर स्वयं उत्पन्न हुए हैं। हमने यह सब अपने स्वामी से सुना है। नारायण परम पुरुषोत्तम भगवान हैं। अनेकों जीव इसके साक्षी हैं। सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, वायु, दिन, रात, जल, पृथ्वी, परमात्मा, प्रातःकाल, सायंकाल आदि सभी इसके साक्षी हैं। प्रत्येक जीव के पापों का लेखा-जोखा यमराज के पास रहता है। अजामिल एक अत्यंत पापी व्यक्ति है। उसने अपने पापों का जीवन में कभी प्रायश्चित नहीं किया। इसीलिए अपने स्वामी के निर्देशों के अनुसार हम उसे अपने लोक में ले जाकर पर्याप्त दण्ड देने के लिए यहाँ आये हैं। हमारे दण्ड देने से वह पवित्र हो जायेगा।

विष्णुदूतों ने उन्हे रोक कर कहा ''प्रिय यमदूतों! यह अजामिल पहले ही अपने पापों का प्रायश्चित कर चुका है। इसने मृत्यु के समय नारायण के नाम का उच्चारण किया था। ऐसा करने से केवल उसके वर्तमान जन्म ही नहीं अपितु सभी पूर्व जन्मों के पापों का भी प्रायश्चित हो गया है। अजामिल ने अपने पुत्र के दिव्य नाम का उच्चारण अनेको बार किया और अन्त में मृत्यु के समय भी उसने उस दिव्य नाम को ही पुकारा। भगवान नारायण के नाम को पुकारना इस जगत के

सभी पापों का सबसे अच्छा प्रायश्चित है। केवल मनोरंजन के लिए, संगीत के उद्देश्य से या फिर बिना ध्यान के ही भगवान के इस पवित्र नाम को पुकारने वाला भी सभी पापों के फल से मुक्त हो जाता है और पूर्णतया लाभान्वित होता है। फिसल कर गिरते समय, छत के ऊपर से गिरते समय या साँप के काटने जैसी परिस्थितियों में भगवान नारायण का नाम लेने वाले को निश्चित रूप से नरक में दण्ड भोगने से मुक्ति मिल जायेगी। जिस प्रकार एक औषधि की शक्ति का ज्ञान न होने पर भी उसका सेवन करने वाले को पूर्ण लाभ होता है उसी प्रकार बिना ध्यान के ही भगवान के पवित्र नाम का जप करने से भी हरिनाम की शक्ति का पूरा प्रभाव होता है।

इस प्रकार विष्णुदूतों ने भागवत् धर्म के सर्वोच्च स्थान को प्रमाणित करके उसे दर्शाते हुए अजामिल को यमदूतों के चंगुल से बचा लिया। पूरी तरह से पराजित यमदूत वापस यमराज के पास गये और संपूर्ण घटना के बारे में बताया। पहली बार किसी ने उन्हे उनके कर्तव्य पालन से रोका और पराजित किया था। यमदूतों के जाते ही अजामिल को होश आ गया और वह पुनः जीवित हो गया। उसने विष्णुदूतों एवं यमदूतों के मध्य हुए वार्तालाप को भली प्रकार सुना और भगवान के पवित्र नाम की शक्ति को समझा था। उसे भगवान विष्णु के सेवकों की उपस्थिति में उसीम आनन्द की अनुभूति हो रही थी और उसने मृत्यु के क्रूर हाथों से बचाने के लिए उनके प्रति आभार भी प्रकट किया। सभी पापों को नष्ट करने वाली एवं किसी व्यक्ति को अत्यंत पवित्र बनाने वाली हरिनाम की शक्ति को समझने के लिए अजामिल के उद्धार की यह उचित कथा है। अजामिल की यह कथा श्रीमद् भागवतम् के छठे स्कन्ध में वर्णित है।

तिरुमल तिरुपति घाट रोड में यान करनेवाले यात्रियों के लिए विज्ञापन

नीचे सूचित समयों के बीच वाहनदारों का प्रवेश रद्ध कर दिया गया है।

१. द्विचक्रवाहन - रात ११.०० बजे से प्रातःकाल ४.०० बजे तक

२. अन्य वाहन (कार और बस) - अर्थरात्रि १२.०० बजे से प्रातःकाल ३.०० बजे तक

३. कुछ अनिवार्य कारणों के कारण उपर्युक्त समयों में परिवर्तन होने की संभावना है।

सूचना - तिरुमल-तिरुपति घाट रोड से यात्रा करनेवाली मोटर घाडीवालें अपना वाहनों से संबंधित 'बार कोड रसीद' को स्कॉनिंग करना अनिवार्य है।

अगले अंक से

नया शीर्षक

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या,
श्री किरणभट

हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी
मोबाइल - ९९४९८७२१४९

चौदह माहेश्वरसूत्र -

मनुष्य परस्पर अपने भाव प्रकट करने केलिए शब्दनिष्ठ भाषा साधन होता है। अक्षर, पद, वाक्य रूप में रहे भाषा से व्यवहार करते हुए हम हमारा प्रतिदिन शाश्वत संबंध रखते है। अक्षरों से पद, उन के जोड से वाक्य का निर्माण होता है। इस में भाषा का सबसे महत्वपूर्ण है अक्षर। अक्षर स्वर और व्यंजन विभाजन के रूप में अनुभाग होता है। अक्षरों का उत्पत्ति, उनकी संख्या और उनका अवतार इसे साबित करने वालों में पाणिनि अग्रगण्य है।

ई. पूर्व पांचवी शदी में पाणिनि संस्कृत भाषा के चोटी निर्माण व्याकरण लोकोत्तर हुआ। विश्व में सभी भाषा वैज्ञानिकों ने ये मुक्ता गला से सहमत किया। उन अक्षरों का मूल है माहेश्वरसूत्र। उन सूत्रों के संबन्धित वृत्तांत उल्लेखनीय है।

नृत्तावसाने नटराजराजो
ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्!
उद्धर्त्तुकामः सनकादिसिद्धान्
एतद्विमर्शे शिवसूत्रजालम्!!

सनक आदि महर्षियों ने महेश्वर के पास जाकर प्रणाम किया और बोला- स्वामिन! भाषासार और तत्व को हमें बताइएँ! ऐसा सविनय प्रार्थना किया। उन को उत्तर शिव अपने हाथ में स्थित डमरुक से दिया। अपने नृत्य पूरा होने के बाद चौदह बार झंकार कर लिया। उस झंकार से चौदह सूत्र निकाल गया। (सामने आए)। महेश्वर के हाथ झंकार से आने से उन सूत्रों को 'माहेश्वरसूत्र' नाम स्थिर हुआ।

पाणिनि आठ अध्यायों में रचित व्याकरण ग्रंथ का मूल है यह माहेश्वरसूत्र।

इन सूत्र -

१. अइउण्, २. ऋलृक्, ३. एओङ्, ४. ऐऔच्, ५. हयवरट्, ६. लण्, ७. ञमड़णनम्, ८. झभञ्, ९.घढधष्, १०. जबगडदश्, ११. खफछठथचटतव्, १२. कपय्, १३. शषसर्, १४. हल् इति माहेश्वराणि सूत्राणि।

उन में पहला चार सूत्र स्वरों के निर्देश करते हैं। बाद में रहे दस सूत्र व्यंजनों का निर्देश देते हैं। 'स्वेन राजते इति स्वरः' - 'स्वयं चमक होने से स्वर कहते है। इसका अर्थ है दूसरे अक्षरों का सहाय न लेते है।' 'स्वरेण व्यज्यते इति व्यंजनम्' - 'स्वर सहाय से व्यंजन का उच्चारण होता है।'

आंग्ल अक्षरमाला में स्वर और व्यंजन एक साथ होता है। संस्कृत में ऐसा नहीं है। स्वर और व्यंजन अलग होने का विषय स्मरण करना है। अक्षरों को

'अच्चुलु', 'हल्लुलू' नामों से बुलाते है। इस नाम का कारण भी माहेश्वरसूत्र है। अब हम प्रैम मिनिस्टर को पी.एम नाम से और चीफ मिनिस्टर को सी.एम नाम से संक्षेप में व्यवहार करते है। इसका कारण संस्कृत भाषा है।

चौदह सूत्रों में प्रथमसूत्र के पहला अक्षर 'अ' अक्षर से चौथा सूत्र के अंतिम अक्षर 'च्' तक 'चकार' संयोग होने से बीच में स्थित वर्णों को स्वर कहते हैं। इस प्रकार पाँचवाँ सूत्र के पहला अक्षर 'ह' वर्ण से चौदहवा सूत्र के अंतिम अक्षर 'ल्' अक्षरों को व्यंजन कहते है। इस प्रकार संक्षेप में कहो प्रक्रिया को माहेश्वरसूत्र परिपूर्णता दिया गया है। इस विवरण से अक्षर संख्या, अक्षर क्रम, स्वर और व्यंजन कैसे आए सीखने के अवकाश होता है।

विश्व के अनेक भाषाओं में से सभी लोग संस्कृत भाषा को सर्वश्रेष्ठ भाषा स्वीकार किया गया है। संस्कृत से अनेक भाषाओं का उत्पत्ति हुई है। संस्कृत केवल प्राचीन भाषा ही नही परंतु एक समृद्ध भाषा भी है जो विश्व भाषाओं में बेमिसाल है। संस्कृत पद का अर्थ है सुधारा हुआ अत्यंत वैज्ञानिक भाषा से है अत्यधिक प्राशस्त्य प्राप्त यह भाषा को अल्पावधि निराधरण मिला, किंतु अब वह पूरे विश्व व्याप्त से अधिक सम्मान ले रहा है। यह कंप्यूटर युग (संगणक युग) में संस्कृत ही एक ऐसी लचीली भाषा है जो वैज्ञानिक विश्वभाषाओं का परिशीलन करके निर्णय किया। भारतीयों की संपदा है यह भाषा। इस संपदा की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हमारे तेलुगु भाषा के अधिकांश पद संस्कृत से ही ली गई है। तेलुगु भाषा को समृद्ध बनाने केलिए संस्कृत का योगदान रहा है। सारे श्लोक और मंत्र संस्कृत से ही है। इनको सही ढंग से उच्चारण करने केलिए संस्कृत का ज्ञान होना आवश्यक है।

संस्कृत सिखाने का जो खोज रहे है वे समाज में अधिक है। तिरुमल तिरुपति देवस्थान भी इस भाषा की अभिवृद्धि केलिए अत्यधिक प्रयास किया जा रहा है। इसी क्रम में श्री वेंकटेश्वर

भक्ति चानेल में 'संस्कृत सीखेंगे' कार्यक्रम का प्रसार किया जा रहा है। जो विशाल मात्रा में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। पाठकों के आवेदन पर टी.वी. पर दिखाए गए पाठों को सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशित करने का प्रयत्न शुरू कर रहे है। इसकी शुरुआत संभाषण से नही परंतु अक्षरों से शुरू करने केलिए यह अक्षरमाला दिया गया है। अक्षरों से लेकर पाठकों को अपने विचारों को व्यक्त करने में सक्षम बनाने केलिए आसान तरीकों के साथ अक्षर माला को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। संस्कृत को देवनागरि लिपि में लिखी जाती है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को इसी लिपी का अनुसरण करना पड़ता है।

एक क्रम पद्धति में हर एक महीने प्रसार हुए पाठों के अंशों को इस पत्रिका में प्रस्तुत किया जाएगा। इन्हे पढकर संस्कृत को सीखकर हमारे इस संस्कृत सिखाने के प्रयत्न को प्रोत्साहन देने केलिए प्रार्थना करते है।

जनवरी महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र
मोबाइल - ९९८९३७६६२५

मेषराशि - स्वास्थ पर ध्यान देना चाहिए। वायु विकार। आर्थिक मामलों में सोचसमझकर निर्णय लें। कार्यक्षेत्र में परेशानी के कारण मानसिक चिन्ता बढ़ेगी। अपनों का साथ दे क्योंकि अनबन बना रहेगा। सन्तान पक्ष कमजोर हैं।

वृषभराशि - सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नौकरी में लाभ, कारोबार सामान्य रूप से चलता रहेगा। परिवार में कोई धार्मिक माँगलिक कार्य सम्पन्न होगा। भौतिक सुखों के साधन बनेंगे। कारोबार के प्रति रुझान रहेगा।

मिथुनराशि - आय के स्त्रोतों में वृद्धि होगी। अधिकारियों से मनमुटाव के योग हैं। आकस्मिक स्थानान्तरण के योग हैं। सन्तान सुख में भी कमी के योग हैं।

कर्कराशि - विद्यार्थियों के लिये अच्छा रहेगा। भविष्य में अच्छी सफलता प्राप्त होने के योग हैं। प्रेम प्रसंग में स्थायित्व बना रहेगा। किसी नये कार्य को करने का विचार मन में पैदा होगा। वैवाहिक जीवन में सुख सुविधाओं का लाभ बना रहेगा।

सिंहराशि - किसी धार्मिक स्थल की यात्रा हो सकती है। धार्मिक पूजा-अर्चना में मन लगा रहेगा। धन वृद्धि के योग हैं। नौकरी करने वालों को भविष्य में लाभकारी संकेत प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कन्याराशि - मेहनत अच्छी करने पर ही सफलता मिल सकती है। सन्तान पक्ष के साथ सामान्य मतभेद हो सकते हैं। धार्मिक पूजा-अर्चना में मन लगेगा, उत्कृष्ट कार्यों को करने का सेकल्प मन में पैदा होगा।

तुलाराशि - घर-परिवार का वातावरण सुखमय रहेगा। किसी नये कार्य को करने में मन लगेगा। मित्रों की ओर से सहायता प्राप्त होगी। आर्थिक उन्नति के लिये प्रयासरत रहें।

वृश्चिकराशि - कुछ संघर्षों के बाद अच्छी सफलता प्राप्त होगी। मन में नवजीवन का संचार होगा। अपने दायित्वों का निर्वाह करने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहेंगे। आकस्मिक लाभ के योग हैं। वैवाहिक जीवन सामान्य रहेगा।

धनुराशि - कोई भी कार्य धीमी गति से चलेगा। किसी पर अचानक विश्वास करना नुकसानदायक हो सकता है। कार्य क्षेत्र में उतार-चढ़ाव चलता रहेगा। वाद-विवाद से बचें कोर्ट-कचहरी के चक्कर काटने पड़ सकते हैं।

मकरराशि - आपके ऊपर शनि की साढ़ेशाती का प्रभाव है। कुछ बाधाओं एवं संघर्ष के बाद सफलता मिलेगी। शुभ कार्य होंगे, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। माता-पिता का स्वास्थ बाधायुक्त हो सकता है।

कुम्भराशि - पूर्व में किये गये प्रयासों में सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में लाभ होगा। अपनों से बचकर रहे। धोखा हो सकता है। किसी के ऊपर अंधविश्वास न करे।

मीनराशि - भूमि खरिदने के योग बनेंगे। सम्पत्ति के क्रय-विक्रय के लिये स्थिति शुभ रहेगी। वैवाहिक जीवन में पति-पत्नी के बीच सुख सहयोग बना रहेगा। व्यापारिक कार्यों में सफलता मिलेगी।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

१. नाम : .....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) .....
.....
पिनकोड .....
मोबाइल नं .....

२. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नडा
☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

३. वार्षिक / जीवन चंदा :

४. चंदा का पुनरुद्धरण :

(अ) चंदा की संख्या :

(आ) भाषा :

५. पेय रकम :

६. पेय रकम का विवरण :

नकद (एम.आर.टि. नं) दिनांक :

धनादेश (कूपन नं) : दिनांक :

मांगड्राफ्ट संख्या : दिनांक :

प्रांत :

दिनांकः चंदा भरनेवाला का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.६०.००, जीवन चंदा : रु.५००-००
- नूतन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र का उपयोग करें।
- इस कूपन को काटकर, पूरे विवरण के साथ इस पते पर भेजें–
- संस्कृत में जीवन चंदा नही है, वार्षिक चंदा रु.६०-०० मात्र है।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, के.टी.रोड,
तिरुपति-५१७ ५०७. (आं.प्र)

नूतन फोन नंबरों की सूचना

चंदादारों और एजेंटों को सूचित किया जाता है कि हमारे कार्यालय का दूरभाष नंबर बदल चुका है और आप नीचे दिये गये नंबरों से संपर्क करें–

कॉल सेंटर नंबर
0877 - 2233333

चंदा भरने की पूछताछ
0877 - 2277777

अर्जित सेवाएँ और आवास के अग्रिम आरक्षण के लिए कृपया इस नंबर से संपर्क करें–

STD Code:
0877

दूरभाष :

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

तिरुपति में गीता जयन्ती महा-महोत्सव

तेलुगु मूल - डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास
हिन्दी अनुवाद - श्री अमोघ गौराँग दास
मोबाइल - ९८२१९१४६४२

तिरुमल तिरुपति देवस्थान (ति.ति.दे), हिन्दू धर्म प्रचार परिषद (एच.डी.पी.पी) एवं इस्कॉन (आई.एस.के.सी.ओ.एन) ने संयुक्त रूप से मार्गशीर्ष के पावन मास की मोक्षदा एकादशी (शनिवार, ७ दिसम्बर २०१९) के दिन एस.वी.हाईस्कूल के प्रांगण में 'गीता जयन्ती' का अद्भुत् महा-महोत्सव भव्य रूप से आयोजित किया। तीन मासों तक जुट कर की गई विश्व-स्तरीय तैय्यारी से इस महोत्सव में भाग लेने वाले विद्यार्थियों एवं अन्य व्यक्तियों को बहुत लाभ हुआ। आयोजकों के अथक प्रयास तिरुपति के अनेकों विद्यालयों से हजारों की संख्या में लड़कों एवं लड़कियों को इस महोत्सव में भाग लेने के लिए आकर्षित करने में सफल हुए। आरम्भ में थोड़ी वर्षा की बूँदे गिरने पर भी सभी विद्यार्थी बहुत उत्साह के साथ गीता जयन्ती महोत्सव में एकत्रित हुए। ति.ति.दे. ने पहली बार इतने बड़े पैमाने पर गीता जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया। श्री पी.बसन्त कुमार, आई.ए.एस्., संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी (जे.ई.ओ.) ने इस महोत्सव के सभी पहलुओं का अवधारणा से लेकर क्रियान्वित होने तक पूर्ण नियंत्रण एवं निर्देशन किया। उनके निर्देशन में हिन्दू धर्म प्रचार परिषद के सचीव श्री के.राजगोपालन ने प्रत्येक कार्य को सभी के संतोषानुसार उत्तमता से निष्पादित किया।

भगवद्गीता से जीवन को उचित प्रकार से चलाने की सीख प्राप्त होती है। इससे पूर्णता से जीने का उचित संदेश मिलता है। गीता का संदेश सभी वर्ग, जाति, धर्म, लिंग, राज्य या देश के व्यक्तियों पर लागू होता है। ति.ति.दे. ने इस गीता जयन्ती महा-महोत्सव का आयोजन तिरुपति की विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं से भाग लेने वाले १०,००० विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए किया। ६ दिसम्बर तक सभी तैय्यारियाँ संतोषजनक रूप से पूरी हो गयी थीं। लेकिन वास्तविक गीता जयन्ती महोत्सव का आरम्भ घने बादलों एवं वर्षा की हल्की बूँदों के साथ हुआ। उस समय भी ति.ति.दे. के सभी अधिकारियों ने उन भगवान श्रीकृष्ण पर पूर्णतया निर्भर होकर, जिन्होने कहा कि वे स्वयं वर्षा को देने वाले हैं और

जैसे विशाखपट्टणम् से पधारी श्रीमती प्रसन्ना, एस.वी.विश्वविद्यालय के कुलपति, ति.ति.दे. के शैक्षणिक अधिकारी, भारतीय विद्या भवन के प्रतिनिधि, रामकृष्ण मठ के प्रतिनिधि, विकास तरंगिनी के प्रतिनिधि एवं चिन्मय मिशन के प्रतिनिधि उपस्थित थे। विद्यार्थियों को गीता पर विशेष प्रवचन देने के लिए पुष्पगिरि पीठ से श्री श्री श्री विद्याशंकर भरतीतीर्थ स्वामी पधारे। ति.ति.दे. ट्रस्ट बोर्ड के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी एवं चंद्रगिरि के एम.एल.ए., श्री चेविरेड्डी भास्कर रेड्डी भी वहाँ पधारे थे। ति.ति.दे. के कार्यकारी अधिकारी (ई.ओ.) श्री अनिल कुमार सिंघाल आई.ए.एस., एवं अपर कार्यकारी अधिकारी श्री ए.वी.धर्मरेड्डी विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित थे।

वही वर्षा को रोकने वाले भी हैं (भगवद्गीता, अध्याय ९, श्लोक १९), तैय्यारी करना जारी रखा। सुबह ९:३० बजे विभिन्न स्कूलों से हजारों की संख्या में लड़कों एवं लड़कियों के समूह एस.वी.हाईस्कूल के प्रांगण में प्रवाहित होने लगे। इतनी भारी संख्या में गीता जयन्ती महोत्सव में भाग लेने के लिए आ रहे विद्यार्थियों का दृश्य अत्यंत जीवन्त था। सभी लड़कों एवं लड़कियों ने १०.३० बजे तक अपना स्थान ग्रहण कर लिया और श्री अन्नमाचार्य के मधुर गीतों के साथ कार्यक्रम का आरम्भ हुआ। फिर सत्य साँई सेवा संस्था के लोगों ने मधुर संगीत के साथ गोविन्द के नामों का गायन किया।

भगवान श्रीकृष्ण की महिमा से पूरित भक्तिमय गीतों की मधुर ध्वनि से संपूर्ण क्षेत्र में एक अद्भुत् वातावरण स्थापित हो गया। उत्सव मनाने के लिए एक सुसज्जित एवं विशाल मंच का निर्माण किया गया था। श्री आचार्य के.राजगोपालन ने अपनी वाक पटुता के प्रयोग से अविराम ही संपूर्ण कार्यक्रम को संचालित किया। इस्कॉन के प्रतिनिधि डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास एवं श्री लीलापरायण दास ठीक समय से मंच पर पहुँचे और उत्साह पूर्वक कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। मंच पर अन्य गणमान्य व्यक्ति

गीता जयन्ती महा-महोत्सव का आरम्भ ब्रह्म कुमारीस के प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत ॐ साधना से हुआ। फिर श्री वेंकटेश्वर नृत्य कलाशाला के प्रतिनिधियों ने अन्नमाचार्य के गीतों के गायन द्वारा स्तुति की। उसके शीघ्र बाद ही मंच पर आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों द्वारा मंगलमय दीप का प्रज्वलन किया गया। तब आचार्य के.राजगोपालन ने मंच पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों का परिचय दिया। बाद में उच्चतर वेदिक अध्ययन के विशेष अधिकारी डॉ.आकेल्ल विभीषण शर्मा ने गीता श्लोकों के सामूहिक गायन का महत्व बताया। उन्होने गीता के बारे में अन्य महत्वपूर्ण बातों का भी विस्तृत वर्णन किया। तब गीता के १५वें अध्याय से श्लोकों के सामूहिक पारायण का मुख्य कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। अपने स्कूलों में कई दिनों तक अभ्यास करने के बाद वहाँ आये १०,००० विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक उस कार्यक्रम में भाग लिया। श्री वेंकटेश्वर वेदिक विश्वविद्यालय से आये संस्कृत के विद्यार्थियों ने गीता गायन का नेतृत्व किया और अन्य उपस्थित हजारों विद्यार्थियों ने उत्तम बितर स्वर के साथ उनका अनुसरण किया। लगभग १५

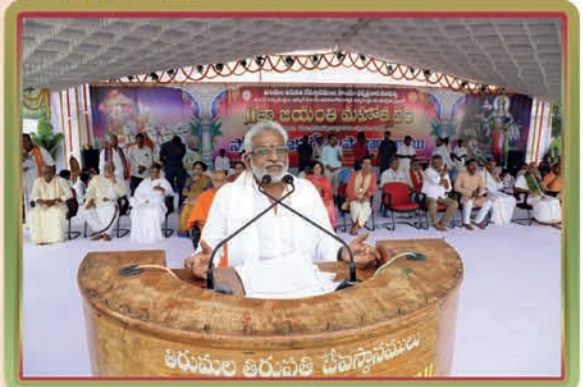

మినట के लिए संपूर्ण वातावरण गीता गायन की शक्ति से आवेषित हो गया। एसा लग रहा था कि मानो भगवद्गीता श्लोकों के तीव्र गायन से संपूर्ण विश्व पवित्र हो गया। बाद में श्रीमती साई प्रसन्ना ने विद्यार्थियों के लाभ के लिए उदाहरणों एवं लघु कथाओं के द्वारा भगवद्गीता के १५वें अध्याय के संदेश का साराँश बताया। उन्होने बताया कि अपने अन्दर पुरुषोत्तम को समझना ही १५वें अध्याय की मुख्य उपलब्धि है। अपना विचार प्रकट करते हुए उन्होने कहा कि सभी मनुष्यों के लिए अपने अन्दर भगवान को समझना अत्यंत स्वाभाविक है।

विद्यार्थियों को गीता का विशेष संदेश देने के लिए पधारे श्री श्री श्री विद्याशंकर भारतीतीर्थ स्वामी ने १५वें अध्याय पर प्रवचन दिया और उसे भली प्रकार समझाया। उन्हेने बताया कि मात्र भगवद्गीता के श्लोकों को पढ़ने से ही सभी शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है और समस्त पापों से मुक्ति तथा मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। उनकी उपस्थिति से सभी लोग अत्यंत प्रसन्न हो गये। श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी ने जोर देते हुए कहा कि ति.ति.दे. हिन्दू धर्म की रक्षा करने के लिए कृत निश्चय है। उन्होने आश्वासन दिया कि हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न किये जायेंगे और यह गीता जयन्ती महोत्सव उन प्रयत्नो के प्रारम्भ में शंख बजाने के समान है। विशेष अतिथि श्री चेविरेड्डी भास्कररेड्डी ने उसी स्कूल के प्रांगण में बिताये अपने विद्यार्थी जीवन की पुरानी स्मृतियों को याद करते हुए विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभ कामनाएँ दीं। उन्होने अपना दृढ विचार प्रकट करते हुए कहा कि गीता अध्ययन करने वाले सभी व्यक्तियों का जीवन पवित्र हो जाता है। संयुक्त कार्यानिर्वहणाधिकारी श्री पी.बसन्त कुमार, आई.ए.एस., ने कहा कि विद्यार्थियों को भगवद्गीता की ओर आकर्षित करने के लिए भव्य रूप से गीता जयन्ती के महोत्सव का आयोजन करके उन्हे अत्यंत प्रसन्नता एवं संतोष की अनुभूति हुई। विद्यार्थियों ने गीता जयन्ती में उत्साह पूर्वक भाग लिया, इसके लिए उन्होंने सभी विद्यार्थियों को बधाई दी और उनके माता-पिता तथा अध्यापकों की गीता पाठ की तैय्यारी करवाने के लिए सराहना की। तब डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास ने बताया कि गीता से समृद्धि, विजय, असाधारण शक्ति एवं नैतिकता को प्राप्त किया जा सकता है। उन्होने जोर डालते हुए बताया कि गीता के संदेश को अपनाकर भाग्य को बदला जा सकता है और गीता उसे भी विजयी बना सकती है जो विजय पाने का इच्छुक नहीं है। हजारों विद्यार्थियों ने उनके संदेश पर सकारात्मक प्रतिक्रिया

व्यक्त की। इस्कॉन (ISKCON) की ओर से सभी १०,००० विद्यार्थियों को परत चढाया हुआ ''गीता जयन्ती २०१९'' कार्ड दिया गया जिस पर जीवन में सदैव सफल होने का भगवद्गीता का संदेश लिखा था। डॉ.वैष्णवाँघ्रि सेवक दास ने सभी विद्यार्थियों से अनुरोध किया कि गीता कार्ड से प्रेरणा प्राप्त करने के लिए ने उसे अपनी पढाई वाली मेज के सामने की दीवार पर लगायें। बाद में अभय होने के संदेश पर जोर देते हुए श्री अनुपमानन्द स्वामी ने गीता पर प्रवचन दिया। उन्होने विद्यार्थियों को निडर एवं विजयी होने के लिए प्रेरित किया। फिर श्री सत्यनारायण राजू एवं डॉ.नागेन्द्रशाई ने विद्यार्थियों से गीता संदेश के बारे में अमूल्य वचन कहे। श्री पी.बसन्त कुमार आई.ए.एस., (जे.ई.ओ) ने मंच पर सभी गणमान्य व्यक्तियों का सुन्दर शाल एवं श्रीवारि प्रसाद के द्वारा सम्मान किया। फिर उन्होने आचार्य के.राजगोपालन एवं श्री रमन प्रसाद का भी सम्मान किया और अंत में ति.ति.दे. अधिकारियों ने कार्यक्रम की सफलता के लिए उनका भली प्रकार सम्मान किया। इस्कॉन (ISKCON) प्रतिनिधियों ने मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों को रोचक प्रश्नो वाला गीता कैलेंडर भेंट किया।

ति.ति.दे. ने गीता जयन्ती महोत्सव में सम्मिलित हुए सभी विद्यार्थियों को उपहार के एक पैकेट में गीता जयन्ती २०१९ कार्ड, १५वें अध्याय के श्लोकों की पेपर शीट, पेय जल एवं बिस्कुट दिये। यद्धपि कार्यक्रम का प्रारभ वर्षा की हल्की बूदों के साथ हुआ था लेकिन गीता गायन प्रारम्भ होते ही संपूर्ण वातावरण सूखा एवं आनन्दमय हो गया। घने बादलों के होने से विद्यार्थियों को तेज धूप का भी सामना नहीं करना पड़ा। सभी का सोचना था कि यह भगवान पद्मावती बालाजी की विद्यार्थियों एवं अन्य प्रतिभागियों पर विशेष कृपा से हुआ। दोपहर १२ बजे तक श्री वेंकटेश्वर भक्ति चैनल (SVBC) ने संपूर्ण विश्व के दर्शकों के लिए टी.वी. पर गीता जयन्ती महा-महोत्सव का सीधा प्रसारण किया। गीता श्लोकों के सामूहिक गायन के सीधे प्रसारण से देश-विदेशों के सभी दर्शक अत्यंत आनंदित हो गये। सभी आयोजकों ने शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए पुलिस एवं अन्य सुरक्षा दलों के प्रति आभार प्रकट किया। हजारों विद्यार्थियों द्वारा कार्यक्रम में आने से लेकर वहाँ से वापस जाने तक प्रदर्शित किया गया अनुशासन पूर्ण आचरण यहाँ अत्यंत उल्लेखनीय है। सभी विद्यार्थी अपने हृदय में गीता की स्मृतियों को भरकर अपने अपने स्कूल वापस चले गये। सभी के द्वारा भगवद्गीता के अनुसार जीवन चलाने से संपूर्ण विश्व वास्तव में सुन्दर एवं समृद्धिशाली बन सकता है। - - -

भक्तों की सेवा में...

२३ नवंबर, २०१९ को तिरुचानूर श्री पद्मावती माताजी के कार्तिक ब्रह्मोत्सवों में शनिवार को मनाए गए ध्वजारोहण कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी एवं कार्यकारी अधिकारी श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस., ने भाग लिए थे।

दि. ०१-१२-२०१९ को तिरुचानूर के श्री पद्मावती माताजी के ब्रह्मोत्सवों में अंतिम दिन पंचमीतीर्थ के शुभ अवसर पर श्री माताजी को आन्ध्रप्रदेश राज्य की ओर से उपमुख्यमंत्री श्री नारायणस्वामी जी ने रेशम कपडों को समर्पित किया। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी भी पत्नी सहित

इस उत्सव में भाग लेकर श्री पद्मावती माताजी के लिए कंठाभूषण एवं रेशम कपड़ों को समर्पित किए।

८ दिसंबर, २०१९ को तमिलनाडु राज्य के सुप्रसिध्द वैष्णव क्षेत्र श्रीरंगम के श्रीरंगनाथ स्वामी के मंदिर में ति.ति.दे. न्यासमंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी एवं ति.ति.दे. के कार्यकारी अधिकारी श्री अनिलकुमार सिघांल, आई.ए.एस., को श्रीरंगनाथ मंदिर के अध्यक्ष श्री वेणुश्रीनिवासन् जी तथा अर्चक स्वामियों ने संप्रदाय पद्धति में स्वागत किया गया। उसके बाद उन दोनों रेशम कपड़ों को सर पर रखकर जुलूस में निकलकर समर्पित किया। दर्शन के बाद मंदिर के अधिकारीगण श्रीरंगनाथ स्वामी के तीर्थप्रसादों को सौंपा गया।

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Dr.K.Radha Ramana, M.A., M.Phil, Ph.D.,** Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri R.V.Vijaykumar,** B.A., B.Ed., **Dy.E.O.,** (Publications & Press), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

देवी माँ के पंचमीतीर्थ और चक्रस्नान

२३-११-२०१९ से ०१-१२-२०१९ तक संपन्न
तिरुचानूर की श्री पद्मावतीदेवी के
वार्षिक ब्रह्मोत्सवों की दृश्य मालिका

ति.ति.दे. फल, पुष्प प्रदर्शन शालाएँ प्रारंभित करते हुए ति.ति.दे. न्यासमंडली के अध्यक्ष
श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी और ति.ति.दे. कार्यकारी अधिकारी श्री अनिलकुमार सिंघाल, आई.ए.एस., जी।

माताजी की सेवा में...

ति.ति.दे. की ओर से देवी माँ को उपहार
समर्पित करने के लिए निकलते हुए उच्चपदाधिकारीगण

कलाप्रदर्शन का दृश्य

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
printing on 25-12-2019. Regd. with the Registrar of Newspapers under "RNI" No.10742, Postal Regd.No.TRP/11 - 2018-2020
Licensed to post without prepayment No.PMGK/RNP/WPP-04/2018-2020

अलमेलुमंगा
हरि अंतरंगा! - अन्नमय्या